राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, मंगलवार, 01 जुलाई 2025

वर्ष 14, अंक 82, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

इंदिरा नहर पर बच्चे जान जोखिम में डालकर कर रहे स्टंट....03

फर्जी बिलों लगाकर माला माल हो रहे सचिव, सहायक सचिव पंचायत....04

अंडर टेबल बाबा लेते हैं मोटी फीस!- अखिलेश यादव का धीरेंद्र शास्त्री पर तीखा वार

●इटावा घटना से गरमाई सियासत

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ- उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में कथावाचकों के साथ मारपीट की घटना ने सियासी हलचल मचा दी है। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इस मामले में बीजेपी सरकार पर निशाना साधा है। इसके साथ ही उन्होंने मशहूर कथावाचक और बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री पर भी गंभीर आरोप लगाए हैं।

अखिलेश यादव का बड़ा आरोप

बीते रविवार को लखनऊ में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान अखिलेश यादव ने कहा कि आजकल कई कथावाचक कथा सुनाने के लिए लाखों रुपए लेते हैं। उन्होंने सीधे-सीधे धीरेंद्र शास्त्री पर आरोप लगाते हुए कहा, "कोई व्यक्ति 50 लाख रुपए लेता है कथा के लिए। क्या किसी की इतनी हैसियत है कि वो बाबा (धीरेंद्र शास्त्री) को अपने घर बुला सके? वो तो अंडर टेबल पैसे लेते हैं। आप खुद पता कर लीजिए कि वो पैसे लेते हैं या नहीं। उनकी कथा की क्या कीमत होती है?" अखिलेश के इस बयान से राजनीति और धार्मिक जगत दोनों में गर्मी आ गई है।

क्या है इटावा कांड?

यह मामला इटावा के बकेवर थाना क्षेत्र के दान्दरपुर गांव का है। 21 जून को कथावाचक मुकुट मणि यादव और उनके साथी संत कुमार यादव के साथ कुछ लोगों ने मारपीट की। आरोप है कि वे कथावाचक की जाति को लेकर आपत्ति कर रहे थे। इन पर आरोप है कि कथावाचक की चोटी काट दी गई, सिर मुंडवा दिया गया और जातिसूचक गालियां दी गईं। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, जिससे लोगों में गुस्सा फैल गया।

सपा प्रमुख ने पीड़ितों को दिया समर्थन

इस घटना के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने पीड़ित कथावाचकों को पार्टी कार्यालय बुलाया। उन्होंने दोनों को सम्मानित किया, 51 हजार रुपए की आर्थिक मदद दी और एक नया हारमोनियम भी भेंट किया। अखिलेश ने कहा कि यह घटना पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक (PDए) समुदायों के खिलाफ अन्याय है। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ खास लोग कथा क्षेत्र पर एकाधिकार बनाए रखना चाहते हैं और इसे धंधा बना लिया है।

धीरेंद्र शास्त्री की प्रतिक्रिया

इटावा की घटना पर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने कहा कि "कथा सुनाना किसी एक जाति का अधिकार नहीं है।" उन्होंने यह भी कहा कि अगर किसी कथावाचक से कोई गलती हुई थी, तो उसका समाधान कानून से होना चाहिए, भीड़ के जरिए नहीं। उन्होंने नेताओं से अपील की कि इस मुद्दे को राजनीति का रंग ना दें, क्योंकि इससे समाज में नफरत फैल सकती है।

अखिलेश के बयान पर अभी तक धीरेंद्र शास्त्री की सीधी प्रतिक्रिया नहीं

हालांकि धीरेंद्र शास्त्री ने इटावा घटना को लेकर अपनी बात रखी थी, लेकिन अखिलेश यादव के ताजा आरोपों पर अब तक उन्होंने कोई सीधा जवाब नहीं दिया है। लेकिन सोशल मीडिया पर धीरेंद्र शास्त्री के समर्थकों और सपा कार्यकर्ताओं के बीच बहस तेज हो गई है।

जानवर जीवन धन हैं, पशु शब्द का इस्तेमाल करना ठीक नहीं- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

स्वतंत्र प्रभात

बरेली- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि जानवरों के लिये 'पशु' शब्द का इस्तेमाल करना 'ठीक नहीं है'। मुर्मू ने जानवरों को 'जीवन धन' करार दिया। राष्ट्रपति ने भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) के 11वें दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा, "जानवरों के बिना किसान आगे नहीं बढ़ सकता, इसलिए 'पशु' शब्द ठीक नहीं लगता। उनके बिना हम जिंदगी सोच नहीं सकते।" उन्होंने कहा, "हमारी संस्कृति जीव-जंतुओं में ईश्वर की उपस्थिति को देखती है।

'भगवान के कई अवतार भी इसी विशिष्ट श्रेणी में हैं'

राष्ट्रपति ने कहा, पशुओं से हमारे देवताओं और ऋषि-मुनियों का संवाद होता है। यह मान्यता भी इस सोच पर आधारित है। भगवान के कई अवतार भी इसी विशिष्ट श्रेणी में हैं।" मुर्मू ने जैव विविधता के महत्व को दर्शाते हुए कहा कि आईवीआरआई जैसी संस्थाओं से अपील है कि वे जैव विविधता को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाएं और आदर्श प्रस्तुत करें। उन्होंने अपने बचपन की किस्सों का उदाहरण देते हुए कहा, "हम जब छोटे थे तब बहुत सारे गिद्ध थे, लेकिन आज गिद्ध लुप्त हो गए हैं। मुझे लगता है कि गिद्ध के विलुप्त होने के पीछे पशु चिकित्सा में इस्तेमाल होने वाली रासायनिक दवाओं की भूमिका है। बहुत सारे कारणों में यह भी एक कारण है। ऐसी दवाओं पर प्रतिबंध लगाना गिद्धों के संरक्षण की दिशा में सराहनीय कदम है।"

'बेटियां अन्य क्षेत्रों की तरफ पशु चिकित्सा क्षेत्र में भी आगे आ रही'

राष्ट्रपति मुर्मू ने दवाओं पर प्रतिबंध लगाने के लिए वैज्ञानिकों के प्रति आभार जताया और कहा, "कई प्रजातियां विलुप्त हो रहीं हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं। इन प्रजातियों का संरक्षण पर्यावरण संतुलन के लिए बहुत ही आवश्यक है। आईवीआरआई जैसे संस्थाओं से अपील है कि वे जैव विविधता को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाएं और आदर्श प्रस्तुत करें।" मुर्मू ने समारोह में मौजूद विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा, "आज पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में छात्राओं की बड़ी संख्या देखकर काफी गर्व महसूस कर रही हूं। बेटियां अन्य क्षेत्रों की तरफ पशु चिकित्सा क्षेत्र में भी आगे आ रही हैं, यह बहुत ही शुभ संकेत है।" मुर्मू ने महिलाओं से आगे आने का आह्वान करते हुए कहा कि गांवों में पशुओं, गायों की सेवा मां-बहनें करती थीं, क्योंकि माता-बहनों से उनका जुड़ाव है।

संक्षिप्त ख़बरें

फुकुशिमा जल विवाद थमा- चीन ने दो साल बाद हटाया जापानी सीफूड पर प्रतिबंध

चीन ने सुनामी से नष्ट हुए फुकुशिमा परमाणु ऊर्जा संयंत्र से थोड़ी मात्रा में रेडियोधर्मी अपशिष्ट जल छोड़े जाने को लेकर लगभग दो साल के प्रतिबंध के बाद जापान से सीफूड के आयात पर प्रतिबंध हटा लिया है। सीमा शुल्क एजेंसी की ओर से जारी एक नोटिस में कहा गया है कि रविवार को प्रतिबंध हटा लिया गया है और जापान के अधिकतर हिस्सों से आयात फिर से शुरू हो जाएगा। अगस्त 2023 में लगाया गया यह प्रतिबंध जापान के मत्स्य उद्योग के लिए बड़ा झटका था। जापानी सीफूड के लिए सबसे बड़ा विदेशी बाजार चीन का है। जापान अपने सीफूड का 20 फीसदी से अधिक हिस्सा चीन को निर्यात करता है। फुकुशिमा स्थित परमाणु संयंत्र 2011 में एक भूकंप के बाद आई भीषण सुनामी से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। कई वर्षों की बहस के बाद, परमाणु ऊर्जा संयंत्र कंपनी को सरकार से यह अनुमति मिल गई कि वह इस अपशिष्ट जल को समुद्र में धीरे-धीरे छोड़े, बशर्ते कि पहले इसे शोधित कर लिया जाए ताकि अधिकतर रेडियोधर्मी तत्वों को हटा दिया जाए। चीन ने इससे असहमति जतायी थी और यह कहते हुए सीफूड के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया था कि रेडियोधर्मी जल को समुद्र में छोड़े जाने से मत्स्य उद्योग और तटीय समुदाय खतरे में आ जाएगा। बहरहाल, जापान के 47 में से 10 प्रांतों के सीफूड पर प्रतिबंध जारी रहेगा। इनमें फुकुशिमा और उसके आसपास के प्रांत भी शामिल हैं।

बीजेपी विधायक और IPS अधिकारी के बीच तीखी बहस, 'डील' शब्द पर मचा गया बवाल, आखिर क्या है 'डील'...

कानपुर- यूपी के कानपुर के ग्रीनपार्क स्टेडियम में एक क्रिकेट मैच के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भाजपा विधान परिषद सदस्य (MLC) अरुण पाठक और IPS अधिकारी अंजलि विश्वकर्मा के बीच जमकर नोकझोंक हो गई। दोनों के बीच हुई तीखी बहस का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। आप को बता दें कि पूरा मामला उस समय शुरू हुआ जब मैच के दौरान गनर की एंट्री को लेकर विवाद खड़ा हो गया। सुरक्षा इंतजामों को लेकर MLC अरुण पाठक ने आपत्ति जताई, जिस पर ADCP अंजलि विश्वकर्मा ने बीच-बचाव कर रहे एक ACP को रोकते हुए कहा कि वह MLC से "डील कर चुकी हैं"। इस टिप्पणी पर विधायक भड़क उठे और बार-बार यह पूछते रहे कि "आखिर क्या डील किया गया?" लेकिन उन्हें कोई स्पष्ट जवाब नहीं मिला। विवाद के दौरान दोनों अधिकारी और विधायक काफी गुस्से में नजर आए। बहस के बीच IPS अधिकारी कुछ दूरी तक चली गईं, लेकिन फिर वापस आकर वहीं खड़ी हो गईं। पुलिसकर्मी और अधिकारी स्थिति को संभालने की कोशिश करते रहे, लेकिन विधायक का ध्यान केवल "डील" शब्द पर केंद्रित रहा।

रिश्ते का कत्ल- जमीनी विवाद में भतीजा बना हैवान, विधवा चाची को उतारा मौत के घाट

स्वतंत्र प्रभात

कौशांबी- उत्तर प्रदेश के कौशांबी जिले में जमीन का बैनामा नहीं करने के लिए रविवार रात दो लोगों ने अपनी ही विधवा चाची की हत्या कर दी। पुलिस के एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। अपर पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार सिंह ने बताया कि चरवा थाना क्षेत्र के मोहिउद्दीनपुर गांव में रहने वाली सावित्री देवी (63) की कोई संतान नहीं थी और उनके पति का भी देहांत हो चुका था।

जमीन के विवाद में हत्या

उन्होंने बताया कि बीती रात (रविवार को) जमीन के विवाद में सावित्री के भतीजे राम प्रकाश उर्फ नन्हे और ओम प्रकाश उर्फ बबली ने धारदार हथियार से उनके चेहरे पर वार किया, जिससे महिला की मौके पर ही मौत हो गई। सिंह ने बताया कि संतान नहीं होने के कारण सावित्री ने अपने जेठ के दो बेटों राम प्रकाश और ओम प्रकाश के नाम अपनी कुछ जमीन का बैनामा किया था, जिसके बाद तीन बीघा जमीन शेष बची थी। अधिकारी ने बताया कि इस जमीन को भी उसके भतीजे अपने नाम लिखवाना चाहते थे, जिसके लिए सावित्री देवी राजी नहीं थी।

अरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस दे रही दबिश

उन्होंने बताया कि इसी कारण दोनों आरोपियों ने धारदार हथियार से अपनी ही चाची की हत्या कर दी। अधिकारी ने बताया कि आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है और मृतका के संबंधियों से शिकायत मिलने पर मामला दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

16 साल की बेटी सहित कपड़ा कारोबारी परिवार ने लिया दुखद फैसला, कर्ज बना मौत की वजह

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ- चौक थाना क्षेत्र के अशरफाबाद इलाके में सोमवार सुबह एक परिवार के 3 सदस्यों ने आत्महत्या कर ली, जिससे पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। बताया गया है कि कपड़ा व्यापारी शोभित रस्तोगी (48), उनकी पत्नी शुचिता (45) और उनकी 16 साल की बेटी ख्याति ने जहरीला पदार्थ खा लिया। घटना सुबह करीब 5 बजे की है।

ख्याति ने चाची को फोन कर दी घटना की सूचना

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, ख्याति ने अपने चाची को फोन कर बताया कि उनके माता-पिता की तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए वह तुरंत आएं। यह सुनकर परिवार में चिंता फैल गई। शोभित के भाई शेखर रस्तोगी तुरंत मौके पर पहुंचे और उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिस तुरंत ही मौके पर पहुंची और तीनों को बेहोशी की हालत में ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया। डॉक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया।

तीनों को ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया, डॉक्टरों ने किया मृत घोषित

पुलिस के अनुसार, तीनों के मुंह से झाग निकल रहा था, जिससे यह संकेत मिलता है कि उन्होंने जहरीला पदार्थ खाया है। घटनास्थल को सील कर दिया गया है और फॉरेंसिक टीम ने वहां से नमूने जुटाकर जांच शुरू कर दी है। साथ ही, पुलिस को एक सुसाइड नोट भी मिला है, जिसमें शोभित ने लिखा है कि वह बैंक से लिए गए लोन की वजह से बहुत परेशान थे और उसे चुकाने में असमर्थ थे। उन्होंने लिखा है कि खुदकुशी करने के अलावा उनके पास कोई और रास्ता नहीं बचा था।

पुलिस को मिला सुसाइड नोट, कर्ज की वजह से था तनाव

मालूम हुआ है कि शोभित की राजाजीपुरम में जुगल फैशन पॉइंट नाम की कपड़े की दुकान थी। व्यापार में मंदी और घाटे के कारण वे बीते कुछ समय से मानसिक तनाव में थे। उन्होंने बैंक से लोन लिया था, लेकिन उसे चुका नहीं पा रहे थे और लोन की रकम बढ़ती ही जा रही थी। इस बात का पता सुसाइड नोट से चला है।

व्यापार में घाटा, बैंक लोन चुकाने में दिक्कत का खुलासा

अधिक जानकारी के अनुसार, जब शोभित और उनकी पत्नी ने जहरीला पदार्थ खाया, उस समय उनकी बेटी ख्याति जीवित थी। उसने अपने माता-पिता की हालत खराब देख, चाची को फोन कर मदद मांगी। लेकिन कुछ देर बाद ही ख्याति ने भी जहरीला पदार्थ खा लिया। पुलिस इस बात की भी जांच कर रही है कि क्या ख्याति ने स्वेच्छा से आत्महत्या की या फिर किसी दबाव में आकर ऐसा किया।

डीसीपी ने कहा जांच जारी, सामूहिक आत्महत्या का लगाया अनुमान

घटना की जानकारी मिलने के बाद पश्चिमी क्षेत्र के डीसीपी विश्वजीत श्रीवास्तव भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि फिलहाल यह मामला सामूहिक आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है। पुलिस हर पहलू की जांच कर रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और फॉरेंसिक जांच से ही पूरी स्थिति का पता चलेगा।

खेत में मिली बच्ची की निर्वस्त्र लाश, पुलिस बोली- कुत्तों ने मारा पर मां बोली- मेरी बेटी की रेप के बाद हुई हत्या

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती- उत्तर प्रदेश में बस्ती जिले के सोनहा इलाके में बीते रविवार की सुबह 12 साल की एक बालिका की लाश खेत में मिली है। लाश का कुछ हिस्सा मिट्टी में दबा हुआ था। बालिका के पूरे शरीर पर नोचने के निशान और नुकीले घाव पाए गए हैं। ग्रामीणों का मानना है कि यह मामला रेप के बाद हत्या का हो सकता है। वहीं, पुलिस का कहना है कि बालिका की मौत कुत्तों के झुंड के हमले की वजह से हुई है। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और रिपोर्ट आने के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।

बिस्तर से लापता बच्ची की लाश खेत में मिली, कपड़े नहीं थे... रेप की आशंका

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, पुलिस ने बताया कि बालिका अपनी मां के साथ मामा के घर आई थी। रात में दोनों ने साथ में खाना खाया और सो गए। रविवार सुबह जब बालिका अपने बिस्तर पर नहीं मिली, तो परिवार वाले उसकी तलाश करने लगे। फिर, खेत की तरफ जाने पर उन्हें वहां बालिका की लाश मिली। शव पर सेरवार नहीं था यानी उसके कपड़े भी नहीं थे। उसके सिर, हाथ और पैर का कुछ हिस्सा मिट्टी में दबा हुआ था। घटना स्थल पर संघर्ष के निशान और चप्पल के टुकड़े भी मिले हैं।ग्रामीणों का कहना है कि बच्ची की रेप के बाद हत्या कर लाश को खेत में दबाने की कोशिश की गई है। उसकी मां का कहना है कि उसकी बेटी रोज सुबह आम बीनने जाती थी। रविवार को भी वह आम लेने गई थी, लेकिन वापस नहीं लौटी।

कुत्तों के झुंड ने शव को घेर रखा था, पुलिस ने हमले की जताई संभावना

सीओ सतेंद्र भूषण त्रिपाठी ने बताया कि जब बालिका की लाश देखी गई तो वहां 8-10 कुत्ते उसे घेर कर खड़े थे। उसके शरीर पर नुकीले घाव और नोचने के निशान थे। शुरुआती जांच में पता चला है कि गांव में कुत्तों का आतंक बहुत ज्यादा है। इन कुत्तों ने कई बकरियों को भी मार डाला है। बुजुर्ग और बच्चे भी इन कुत्तों के काटने का शिकार हो चुके हैं। सुबह भी एक बच्चे को भी इन कुत्तों ने काट लिया है, जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बालिका के मामले में भी ऐसा ही लग रहा है कि कुत्तों ने हमला किया है।

बोधगया मंदिर बौद्धों को सौंपने की याचिका पर विचार करने से SC का इनकार

पीठ ने पूछा, आप हाईकोर्ट के समक्ष क्यों नहीं उठाते मामला?

स्वतंत्र प्रभात

बिहार - उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) ने बोधगया मंदिर अधिनियम, 1949 (The Bodh Gaya Temple Act, 1949) की वैधता को चुनौती देने वाली याचिका पर विचार करने से सोमवार को इनकार कर दिया और याचिकाकर्ता को संबंधित उच्च न्यायालय का रुख करने को कहा।

महाबोधि मंदिर यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल

बिहार के बोधगया में स्थित महाबोधि मंदिर यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल है। यह भगवान गौतम बुद्ध के जीवन से जुड़े चार पवित्र क्षेत्रों में से एक है। बोधगया वह स्थान है, जहां भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। बोधगया मंदिर अधिनियम, 1949 की वैधता को चुनौती देने वाली याचिका सुनवाई के लिए न्यायमूर्ति एम एम सुंदरेश और न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की पीठ के समक्ष पेश की गई। पीठ ने याचिकाकर्ता के वकील से याचिका में उठाए गए मुद्दे के बारे में पूछा। वकील ने कहा, "मैंने (याचिकाकर्ता) अनुरोध किया है कि बोधगया मंदिर अधिनियम को अवैध बताते हुए रद्द किया जाए।" पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता को संबंधित उच्च न्यायालय का रुख करना चाहिए।

याचिकाकर्ता को उच्च न्यायालय जाने की छूट

पीठ ने पूछा, "आप यह मामला उच्च न्यायालय के समक्ष क्यों नहीं उठाते?" न्यायालय ने कहा, "हम भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत याचिका पर विचार करने के लिए इच्छुक नहीं हैं। हालांकि, याचिकाकर्ता को उच्च न्यायालय जाने की छूट दी जाती है।" बोधगया मंदिर अधिनियम, 1949 मंदिर के बेहतर प्रबंधन से जुड़ा है। महाबोधि मंदिर परिसर में 50 मीटर ऊंचा भव्य मंदिर, वज्रासन, पवित्र बोधि वृक्ष और बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के छह अन्य पवित्र स्थल शामिल हैं, जो कई प्राचीन स्तूपों से घिरे हैं, तथा आंतरिक, मध्य और बाहरी गोलाकार सीमाओं द्वारा अच्छी तरह से संरक्षित हैं।

सातवां पवित्र स्थान "लोटस पॉन्ड", दक्षिण की ओर गलियारे के बाहर स्थित है। इस साल अप्रैल में राष्ट्रीय लोक मोर्चा के सुप्रीमो और पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा ने बोधगया मंदिर अधिनियम, 1949 के प्रावधानों में संशोधन की मांग की थी, ताकि महाबोधि महाविहार मंदिर का प्रबंधन बौद्धों को सौंपा जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय संसदीय दिवस- संसदों के अंतर्मथन का क्षण

[लोकतंत्र का संस्कारगृह - संसद और सतत समावेश]

जब हम किसी राष्ट्र की आत्मा को समझने की कोशिश करते हैं, तो सबसे पहले हमारे सामने उसकी संसद की छवि उभरती है–वह पवित्र मंच, जहाँ जनता की आकांक्षाएँ, चिंताएँ और अधिकार एक स्वर में गूंजते हैं। संसद केवल कानूनों का कारखाना नहीं, बल्कि लोकतंत्र का वह जीवंत हृदय है, जो हर नागरिक की धड़कनों को प्रतिबिंबित करता है। इस जीवंतता को वैश्विक स्तर पर और सशक्त करने के लिए हर साल 30 जून को अंतर्राष्ट्रीय संसदीय दिवस मनाया जाता है। यह दिन केवल संसदों की उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि उनके दायित्वों, चुनौतियों और भविष्य की दिशा में गहन चिंतन का अवसर है। यह एक ऐसा आह्वान है, जो संसदों को याद दिलाता है कि वे केवल सत्ता का केंद्र नहीं, बल्कि जनता की आवाज़, विश्वास और उम्मीदों का प्रतीक हैं। इस महत्वपूर्ण दिवस की शुरुआत 2018 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव के माध्यम से हुई, जब 30 जून को अंतर्राष्ट्रीय संसदीय दिवस के रूप में मान्यता दी गई। यह तारीख संयोगवश 1889 में स्थापित इंटर-पार्लियामेंटरी यूनियन (आईपीयू) की स्थापना की वर्षगांठ से भी जुड़ी है। आईपीयू वह वैश्विक संगठन है, जिसने 136 साल पहले संसदों को एक मंच पर लाकर वैश्विक संवाद, शांति और लोकतंत्र को बढ़ावा देने की नींव रखी। इसका नारा–"लोकतंत्र के लिए, सभी के लिए" और उद्देश्य"संसदों के माध्यम से विश्व शांति और विकास के लिए हर आवाज़ को सुनना÷ आज भी उतना ही प्रासंगिक है। 2025 में इस दिवस की थीम "संसद और सतत विकास लक्ष्य- लैंगिक समानता और समावेशिता"न केवल समय की मांग है, बल्कि लोकतंत्र की सच्ची आत्मा को उजागर करती है। यह थीम हमें याद दिलाती है कि कोई भी लोकतंत्र तब तक पूर्ण नहीं हो सकता, जब तक उसमें हर वर्ग–महिलाएँ, युवा, हाशिए पर पड़े समुदाय, और सामाजिक रूप से उपेक्षित लोग–की समान भागीदारी सुनिश्चित न हो।

आज विश्व संयुक्त राष्ट्र के 2030 सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है। इन 17 लक्ष्यों में लैंगिक समानता (एसडीजी-5) और मज़बूत, समावेशी संस्थानों का निर्माण (एसडीजी-16) संसदों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। आंकड़े बताते हैं कि वैश्विक स्तर पर संसदों में महिलाओं की भागीदारी अभी भी केवल 26% है (आईपीयू, 2023), जबकि भारत में यह आंकड़ा और भी कम, लगभग 14.4% (लोकसभा, 2024) है। यह असंतुलन न केवल लैंगिक समानता के लिए चुनौती है, बल्कि लोकतंत्र की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठाता है। संसदें नीतियां बनाती हैं, संसाधनों का आवंटन करती हैं और सरकार को जवाबदेह बनाती हैं। लेकिन अगर इन नीतियों में आधी आबादी की आवाज़ शामिल नहीं है, तो क्या यह लोकतंत्र वास्तव में "सभी के लिए" है? भारत, जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, इस संदर्भ में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। भारतीय संसद, लोकसभा और राज्यसभा, करोड़ों लोगों की आकांक्षाओं का केंद्र है। यह वह मंच है, जहाँ 1.4 अरब लोगों की विविधता को एक स्वर में ढाला जाता है। लेकिन इस विविधता को प्रतिबिंबित करने के लिए संसद को और अधिक समावेशी होना होगा। उदाहरण के लिए, नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 के तहत संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण का प्रावधान एक ऐतिहासिक कदम है, लेकिन इसका पूर्ण कार्यान्वयन अभी बाकी है। इसी तरह, युवाओं और हाशिए पर पड़े समुदायों जैसे आदिवासियों, दलितों, और एलजीबीटीक्यू+ समुदाय को संसद में अधिक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में 65% आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है, लेकिन संसद में युवा सांसदों की संख्या केवल 12% के आसपास है। यह असंतुलन न केवल नीतियों को प्रभावित करता है, बल्कि युवाओं के बीच राजनीतिक संस्थानों के प्रति विश्वास को भी कम करता है।

अंतर्राष्ट्रीय संसदीय दिवस हमें उन मूलभूत सवालों से रूबरू कराता है, जो अक्सर संसदीय बहसों के शोर में दब जाते हैं। क्या संसदें जनता के सबसे ज़रूरी मुद्दों को प्राथमिकता दे रही हैं? क्या वे लैंगिक भेदभाव, सामाजिक असमानता और पर्यावरणीय संकट जैसे मुद्दों पर ठोस कदम उठा रही हैं? आईपीयू की 2022 की वैश्विक संसदीय रिपोर्ट के अनुसार, केवल 40% संसदों ने ही सतत विकास लक्ष्यों को अपनी नीतियों में स्पष्ट रूप से शामिल किया है। यह आंकड़ा चेतावनी देता है कि संसदों को अपनी भूमिका को और अधिक सक्रिय और प्रभावी बनाना होगा। भारत में, उदाहरण के लिए, संसद ने जलवायु परिवर्तन (एसडीजी-13) और शिक्षा (एसडीजी-4) जैसे क्षेत्रों में कई नीतियां बनाई हैं, लेकिन उनकी निगरानी और कार्यान्वयन में कमी दिखती है। संसदों की जवाबदेही और पारदर्शिता लोकतंत्र की नींव है। आईपीयू के अनुसार, विश्व की 80% संसदें अब डिजिटल तकनीकों का उपयोग कर रही हैं, जैसे कि ऑनलाइन सत्र, ई-वोटिंग, और नागरिक संवाद मंच। भारत में भी डिजिटल संसद पहल के तहत संसद के सत्रों को डिजिटल रूप से प्रसारित किया जा रहा है, लेकिन नागरिकों की सीधी भागीदारी अभी भी सीमित है। अंतर्राष्ट्रीय संसदीय दिवस हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि संसदें न केवल नीतियां बनाएं, बल्कि नागरिकों के साथ सीधा संवाद स्थापित करें। उदाहरण के लिए, न्यूज़ीलैंड और कनाडा जैसे देशों में "संसदीय ओपन डे" जैसे आयोजन होते हैं, जहाँ आम लोग संसद में जाकर अपने सांसदों से मिल सकते हैं। भारत में भी इस तरह की पहल लोकतंत्र को और जीवंत बना सकती हैं।

इस दिवस का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह संसदों को आत्म-मूल्यांकन का अवसर देता है। क्या संसदें वास्तव में समावेशी हैं? क्या वे बदलते समय के साथ तालमेल बिठा रही हैं? आईपीयू की एक रिपोर्ट के अनुसार, विश्व की केवल 20% संसदों में ही लैंगिक समानता और समावेशिता के लिए विशेष समितियाँ हैं। भारत में, हालाँकि संसद में महिला सशक्तीकरण समिति जैसी संरचनाएँ हैं, लेकिन इनका प्रभाव अभी व्यापक नहीं हुआ है। यह समय है कि संसदें न केवल कानून बनाएं, बल्कि स्वयं को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण और जवाबदेह बनाने के लिए नवाचार करें। नागरिकों की भूमिका भी इस दिन उतनी ही महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र केवल संसद तक सीमित नहीं है; यह जनता की जागरूकता और भागीदारी से जीवित रहता है। हम कितनी बार अपने सांसदों से सवाल पूछते हैं? कितनी बार संसद के सत्रों पर ध्यान देते हैं? भारत में, आरटीआई (सूचना का अधिकार) जैसे उपकरणों ने नागरिकों को सशक्त किया है, लेकिन संसदीय कार्यवाहियों में उनकी भागीदारी अभी भी न्यूनतम है। अंतर्राष्ट्रीय संसदीय दिवस हमें यह याद दिलाता है कि लोकतंत्र एक दोतरफा प्रक्रिया है, संसद को जनता के प्रति जवाबदेह होना होगा, और जनता को संसद के प्रति जागरूक। 30 जून केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है–एक संकल्प कि संसदें केवल सत्ता के गलियारों में गूंजने वाली आवाज़ें न बनें, बल्कि समाज के हर कोने तक समानता, न्याय और विकास की गूंज पहुँचाएँ। जब संसदें हर नागरिक की आवाज़ को सुनेंगी–चाहे वह एक महिला हो, एक युवा हो, या समाज के हाशिए पर खड़ा व्यक्ति–तब ही लोकतंत्र एक नारा नहीं, बल्कि एक जीवनशैली बनेगा। यह दिवस हमें यह विश्वास दिलाता है कि संसदें केवल कानून बनाने वाली इमारतें नहीं, बल्कि वे मंदिर हैं, जहाँ मानवता की आकांक्षाएँ आकार लेती हैं। इस 30 जून को हम संकल्प लें कि हमारी संसदें न केवल सशक्त होंगी, बल्कि संवेदनशील, समावेशी और सतत विकास की दिशा में मार्गदर्शक भी बनेंगी। यही लोकतंत्र की सच्ची जीत होगी।

प्रो. आरके जैन

संपादकीय

विवाह संस्कार को कलंकित कर हत्यारिन बनती नवयौवनाए!

समझ में नहीं आता है कि क्या यह वही भारतीय समाज है जिसकी ललनाएं विवाह को सात जन्म का पवित्र सम्बन्ध मानकर यमराज से भी टकराने का साहस करती थी ऐसे एक नहीं लाखों उदाहरण है जिनमें विपरीत परिस्थितियों में भी अपने पति की प्राण रक्षा के लिए अनेक कष्ट सहन कर अपनी जान की भी बाजी लगा दी लेकिन बोए पेड़ बबूल का तो आम कहां से होए यह वो समय था जब भारतीय समाज की लड़कियां शैशव काल से सीता सावित्री गार्गी और लक्ष्मी बाई की चरित्र गाथाओं को पढ़ने सुनने के बाद अपने चरित्र को सर्वोच्चता देती थी लेकिन आज दौर बदल चुका है एकता कपूर के सीरियलों को देख कर पैदा और परवरिश पा रही लड़कियों को समझ नहीं आ रहा है कि सीरियलों में दर्शाये गए विवाह पूर्व प्यार सेक्स लिव-इन और विवाहेत्तर संबंधो में कौन सा रिश्ता सत्य है? बिन फेरे हम तेरे लिव-इन रिलेशन को मान्यता दे रही अदालतों और मूकदर्शक बने समाज में लोकलाज का भय समाप्त हो गया है और प्रकृति प्रदत्त सुकुमार कोमल और जल्द भ्रमित होने वाली जींस को लेकर जन्म लेने वाली लड़कियां एक बेहद भोगी कामातुर सोशल मीडिया पर रील बनाने में लगे समाज में दिग्भ्रमित होकर जाने अनजाने अपराध के रास्ते पर भटक रहीं हैं और रिश्तों का कत्ल करने से नहीं चूक रहीं हैं। इस बदलते सामाजिक परिवेश में रिश्तों को तार-तार करने वाली घटनाएं लगातार बढ़ती ही जा रही है, जो बेहद चिंता जनक है, क्योंकि कहीं बेटा अपनी मां-बाप की हत्या कर रहा है, तो कहीं पति अपनी पत्नी की। सिर्फ इतना ही नहीं, अब तो पत्नियां भी अपने पति की हत्या कर और करवा रही है। हर रिश्ता विश्वास और भरोसे पर टिका होता है, लेकिन पिछले कुछ समय में ऐसी घटनाएं सामने आ रही है, जो दर्शाती है कि रिश्तों में विश्वास और भरोसा खत्म होता जा रहा है। भौतिकवादी दौर में इंसान इतना ज्यादा स्वार्थी होता जा रहा है कि यह रिश्तों के मायने ही भूलता जा रहा है।

हाल में ऐसी ही एक घटना मेघालय के रमणीय पर्यटक स्थल शिलांग से सटे चेरापूंजी में सामने आयी है, जो मानवता को झकझोरने वाली है। इंदौर के नव विवाहित युवक राजा रघुवंशी की हत्या मामले में जो सच्चाई सामने आयी है, उसने पूरे देश को चौंका दिया है। ये पूरा मामला प्यार, शादी और धोखे का ऐसा मिश्रण है, जिसने समूचे देश को झकझोर दिया है। भारतीय समाज में शादी के बंधन को सात जन्मों का साथ माना जाता रहा है, पर आजकल के रिश्ते सात जन्म तो दूर ठीक से सात दिन सात हफ्ते में ही दरक रहे हैं। पुलिस खुलासे में पत्नी सोनम रघुवंशी ही इस हत्याकांड की मुख्य साजिश कर्ता के तौर पर सामने आई है। बताया जा रहा कि सोनम ने अपने फर्म के ही कर्मचारी प्रेमी राज कुशवाह के साथ मिलकर पति की हत्या की साजिश रची । शादी से पहले सोनम और राज के बीच प्यार था। लेकिन घरवालों ने उसकी शादी राजा से करवा दी। पुलिस का आरोप है कि पत्नी सोनम ने ही राजा को रास्ते से हटाने के लिए ये साजिश रची। इस पूरे घटनाक्रम ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया कि आखिर किस पर भरोसा करें। जब पत्नी ही अपने सुहाग की कातिल बन जाए तो शादी जैसे पवित्र रिश्ते पर कैसे भरोसा किया जाएगा। राजा रघुवंशी और सोनम की शादी 11 मई को इंदौर में बड़े धूमधाम से हुई थी। शादी के वीडियो में राजा और सोनम बेहद खुश नजर आ रहे। वो डांस करते दिख रहे। शादी के बाद सोनम ने ही हनीमून के लिए शिलॉन्ग की टिकट कराई थी। हालांकि, राजा रघुवंशी का हनीमून पर जाने का प्लान नहीं था। लेकिन पत्नी की जिद के आगे वो तैयार हो गया। जानकारी ये भी आ रही कि सोनम ने वापसी को लेकर टिकट नहीं कराया था। मेघालय पहुंचने के बाद 23 मई को अचानक ही राजा रघुवंशी और सोनम लापता हो गए। फिर राजा की लाश तो मिली लेकिन सोनम का पता नहीं चला। 9 जून की सुबह-सुबह खबर आई कि सोनम यूपी के गाजीपुर में एक दावे के पास देखी गई। इसके बाद उसने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। यह मामला केवल एक हत्याकांड नहीं, बल्कि सामाजिक दवाव, मनोवैज्ञानिक जटिलताओं, और संगठित अपराध के संभावित नेटवर्क का एक जटिल मिश्रण है। देखा जाए तो समाज में पहले यह सुनने को मिलता था कि पति ने अपनी पत्नी की हत्या कर दी है, लेकिन कुछ समय से इसके विपरीत खबरे आ रही है। इस साल में कई पत्नियों ने अपने पतियों को मौत के घाट उत्तरवा दिया। रिश्ते और भरोसे के कत्ल की यह पहली वारदात नहीं है।

इससे पहले मेरठ का सौरभ हत्याकांड सामने आया था। इसी साल 3 मार्च 25 को मेरठ उत्तर प्रदेश की मुस्कान ने अपने प्रेमी साहिल के साथ मिलकर सौरभ की हत्या कर दी थी। उसके शव के कई टुकडे कर नीले ड्रम में सीमेंट के साथ डाल दिया था। फिर मुस्कान और साहिल घूमने चले गए। जब दोनों लौटे तब सौरभ की हत्या का खुलासा हुआ, फिलहाल दोनों जेल में बंद है। मेरठ में ही अमित कुमार की हत्या उसकी पत्नी रविता ने अपने प्रेमी अमरदीप के साथ मिलकर कर दी थी। इस हत्या को हादसा साबित करने के लिए रविता ने अमित के शव के पास सांप रख दिया था और लोगों को बताने लगी कि अमित की सांप के काटने से मौत हुई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद रविता का झूठ पकड़ा गया। उसने अपने प्रेमी अमरदीप के साथ मिलकर अमित की गला घोंटकर हत्या की थी। इसी साल बिजनौर में भी पत्नी ने अपने पति की हत्या कर दी। रेलवे में कर्मचारी दीपक कुमार की संदिग्ध परिस्थिति में लाश मिली थी। पत्नी शिवानी ने ससुराल वालों को बताया कि दीपक की हार्ट अटैक से मौत हुई है। दीपक के परिवार वालों को शक हुआ तो वह लाश का पोस्टमार्टम कराने की मांग करने लगे। शिवानी ने पोस्टमार्टम से इनकार कर दिया। बाद में पुलिस ने जब पोस्टमार्टम कराया तो पता चला कि दीपक की गला घोंटकर हत्या की गई थी और पत्नी ही कातिल निकली। इसी साल मार्च में बिजनौर में एक और पत्नी ने अपने पति की हत्या करवा दी थी। 13 मार्च को होली के दिन मकरेंद्र अपनी पत्री पारुल की दवा लेने मार्केट गए थे, लेकिन वह वापस नहीं लौटे। 15 मार्च को मकरेंद्र की लाश अमरोहा में मिली। पुलिस की जांच में पता चला कि पारुल का प्रेम प्रसंग चल रहा था, जिसकी भनक मकरेंद्र को लग गई थी। इसके बाद पारुल ने अपने प्रेमी विनीत के साथ मिलकर मकरेंद्र की हत्या करवा दी। पिछले एक साल के भीतर ऐसी कई घटनाएं सामने आयी हैं। अपराध और नैतिक पतन की ये घटनाएं यह दर्शाती हैं कि कहीं न कहीं हमारी सामाजिक संरचना, पारिवारिक मूल्य और मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर संकट है। ऐसी घटनाएं दर्शाती है कि समाज में रिश्तों की अहमियत धीरे-धीरे कम होती जा रही है और इसके कई कारण हो सकते हैं।

पहले जहाँ रिश्तों में अपनापन, विश्वास और त्याग होता था, वहीं अब स्वार्थ, लालच और दिखावे ने उनकी जगह ले ली है। लोग नैतिकता और ईमानदारी को छोड़कर किसी भी तरह से धन और सफलता प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, चाहे उसके लिए उन्हें किसी की हत्या की क्यों न करना पड़ें। लोगों में नैतिकता और ईमानदारी घटती जा रही है और लालच, ईर्ष्या और व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ रहे हैं। समाज में जो घटनाएं हो रही हैं, उन्हें देखकर यही लगता है कि हम घोर कलयुग के उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ पहले रिश्ते, प्रेम, सम्मान और नैतिकता को महत्त्व दिया जाता था, वहीं अब स्वार्थ, लालच, क्रोध और हिंसा हावी होती जा रही हैं। समाज में बढ़ते अपराधों को देखकर ऐसा लगता है कि इंसानियत, सहनशीलता और प्रेम धीरे-धीरे खत्म होते जा रहे हैं। भारतीय समाज में नैतिक संस्कारों रिश्तो की मर्यादा और पवित्रता के मानवीय गुणों को किस तरह बनाए रखा जाए इस पर गहन विचार और व्यवहार की जरूरत है ताकि लड़के लड़कियों में समाज के लोकलाज का भय बने और रिश्तों की पवित्रता बनी रहे।

मनोज कुमार अग्रवाल

दैनिक राशिफल

ज्योतिष सेवा केन्द्र लखनऊ
डॉ.कौशलेन्द्र पाण्डेय जी

मेष–राजकीय अवरोध दूर होंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। धर्म-कर्म में मन लगेगा। व्यापार मनोनुकूल चलेगा। नौकरी में सहकर्मी साथ देंगे। निवेश शुभ रहेगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से परिचय होगा। घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। प्रसन्नता रहेगी। जल्दबाजी न करें।

वृष–समाजसेवा में रुझान रहेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नई आर्थिक नीति बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। पुरानी व्याधि से परेशानी हो सकती है। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। व्यापार वृद्धि होगी। ऐश्वर्य पर व्यय होगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। समय अनुकूल है। लाभ लें। प्रमाद न करें।

मिथुन–विवेक का प्रयोग लाभ में वृद्धि करेगा। कोई बड़ी बाधा से सामना हो सकता है। राजभय रहेगा। जल्दबाजी व विवाद करने से बचें। रुका हुआ धन मिल सकता है। व्यावसायिक यात्रा मनोनुकूल रहेगी। किसी अपने के व्यवहार से दुःख होगा। नौकरी में उच्चाधिकारी का ध्यान खुद की तरफ खींच पाएंगे।

कर्क–अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। यात्रा में जल्दबाजी न करें। चिंता तथा तनाव बने रहेंगे। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। स्वास्थ्य पर बड़ा खर्च हो सकता है। विवाद को बढ़ावा न दें। आय में कमी रहेगी। व्यवसाय की गति धीमी रहेगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। बेचैनी रहेगी।

सिंह–प्रेम-प्रसंग में जल्दबाजी न करें। शारीरिक कष्ट से कार्य में रुकावट होगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। यात्रा मनोरंजक रहेगी। नौकरी में अनुकूलता रहेगी। लाभ में वृद्धि होगी। निवेश में जल्दबाजी न करें। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। जरूरी वस्तु गुम हो सकती है।

कन्या–दूर से अच्छी खबर प्राप्त हो सकती है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। कोई बड़ा काम करने की योजना बनेगी। पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। घर में अतिथियों पर व्यय होगा। किसी मांगलिक कार्य का आयोजन हो सकता है। व्यवसाय ठीक चलेगा। शत्रु शांत रहेंगे। प्रसन्नता रहेगी।

तुला–मित्रों की सहायता कर पाएंगे। मेहनत का फल मिलेगा। मान-सम्मान मिलेगा। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। नौकरी में उच्चाधिकारी की प्रसन्नता रहेगी। नया उपक्रम प्रारंभ करने की योजना बनेगी। व्यापार मनोनुकूल लाभ देगा। समय अनुकूल है। प्रसन्नता रहेगी।

वृश्चिक–कोई बुरी खबर प्राप्त हो सकती है। पारिवारिक चिंताएं रहेंगी। मेहनत अधिक तथा लाभ कम होगा। दूसरों से अपेक्षा न करें। व्यवसाय ठीक चलेगा। मातहतों का सहयोग नहीं मिलेगा। कुसंगति से बचें, हानि होगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। आय में निश्चितता रहेगी। प्रमाद न करें।

धनु–बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। लाभ के असवर हाथ आएंगे। यात्रा में सावधानी रखें। किसी पारिवारिक आनंदोत्सव में हिस्सा लेने का मौका मिलेगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद प्राप्त होगा। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शत्रु पस्त होंगे। विवाद न करें। बेचैनी रहेगी।

मकर–जीवनसाथी से कहासुनी हो सकती है। संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। बेरोजगारी दूर होगी। करियर बनाने के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी में प्रशंसा प्राप्त होगी। पारिवारिक सहयोग से कार्य में आसानी होगी। दूसरों के कार्य में दखल न दें। प्रमाद से बचें।

कुंभ–आशंका-कुशंका के चलते कार्य की गति धीमी रह सकती है। घर-परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। वैवाहिक प्रस्ताव प्राप्त हो सकता है। कारोबार में वृद्धि के योग हैं। सभी ओर से सफलता प्राप्त होगी। दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। लाभ होगा।

मीन–स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। वाहन, मशीनरी व अग्नि आदि के प्रयोग में विशेषकर स्त्रियां सावधानी रखें। कार्यों की गति धीमी रहेगी। बुद्धि का प्रयोग करें। प्रयास अधिक करना पड़ेंगे। निराशा हावी रहेगी। आय में निश्चितता रहेगी। व्यापार ठीक चलेगा। लाभ होगा।

30 जून विशेष- हूल दिवस- साल वन की गूंज, हूल से आज के संविधान तक

साल था 1855। गर्मियों की उमस से भरी 30 जून की दुपहरी में, साहिबगंज ज़िले के भोगनाडीह गाँव से साल-महुआ के घने साये को चीरती एक आवाज़ उठी हूल, धरती बोड़े जाबो, कंपनी राज तबाह करबो! यह घोष सिदो मर्मू और कन्हू मर्मू की थी, और देखते-देखते तकरीबन साठ हज़ार संथाल स्त्री-पुरुष पारंपरिक तीर-धनुष, फरसा और बाँस की लाठियों के साथ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी, महाजनी क़र्ज़ और ज़मींदारी शिकंजे के विरुद्ध मैदान में उतर आए। इतिहास इसे संताल हूल नाम से याद करता है एक ऐसा जन-उभार, जिसकी लौ ने न सिर्फ औपनिवेशिक सत्ता को चौंकाया, बल्कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम की भावी प्रणालियों को दिशा दी। संतालों की पीड़ा एक दिन में नहीं पली थी। जंगल क़ानूनों ने उनके सामूहिक भू-अधिकार छीन लिये मालगुज़ारी और टैक्स-कलेक्टरों ने नक़द कर वसूलना शुरू कर दिया, जबकि संथाल अर्थव्यवस्था अनाज-अर्थ और परस्पर विनिमय आधारित थी। महाजन ऊँचे ब्याज पर कर्ज़ देते, फिर वसूली के नाम पर ज़मीन और मेहनत दोनों हथिया लेते। इस दोहरी लूट ने पारंपरिक आत्मसम्मान दामिन-इ-कोह (पहाड़ी की छाया) संस्कृति को गहरी ठेस पहुँचाई। जब आक्रोश ने करवट ली, तो सिदो-कान्हू ने स्पष्ट कहा, हमारा धर्म, जंगल और ज़मीन पर पहला हक़ हमारा है सरकार ने इसे छीना है, तो हम सरकार को हटाएँगे। ब्रिटिश दस्तावेज़ों में दर्ज है कि 1855 की पहली जुलाई तक डाक-तार क्षतिग्रस्त थे, कलकत्ता मुख्यालय तक संदेश पहुँचाना मुश्किल था, और दमन के लिए सैनिक टुकड़ियाँ एकत्रित करनी पड़ीं। कंपनी ने 10 नवंबर 1855 को संताल परगना में मार्शल लॉ लागू किया। परंतु जंगलों, पहाड़ियों और दलदली मैदानों से परिचित संताल योद्धाओं ने छापामार रणनीति अपनायी, जिससे दमन-युद्ध लंबा खिंचा। ब्रिटिश इतिहासकार चार्ल्स एंडरसन ने लिखा, उनके पास बारूद कम, लेकिन संगठन अद्भुत था हर गाँव चौकी बन गया था। दिसंबर तक झारियाग्राम, बहरैत, बरहैत से होते हुए यह विद्रोह बंगाल के राजमहल की तलहटी तक पहुँच गया। 3 जनवरी 1856 को जब सिदो-कान्हू, चाँद-भैरव तथा सैकड़ों अनुयायी शहीद हुए, तब भी आंदोलन ख़त्म न हुआ गाँव-गाँव में हूल मनाया जाना प्रतिरोध का प्रतीक बना रहा। विद्रोह की आँच बुझाने के बाद भी ब्रिटिश सत्ता को संताल परगना अधिनियम, 1855 लागू करना पड़ा, जिसने क्षेत्र को अलग प्रशासनिक ढाँचा दिया। आगे चलकर संताल परगना टेनेंसी एक्ट, 1876 ने आदिवासी भूमि-हस्तांतरण पर रोक लगा दी यह पहला औपनिवेशिक क़ानून था, जिसने आदिवासी हक़ों को क़ानूनी अभयारण्य दिया।हूल का अर्थ महज़ विद्रोह नहीं है संथाली में यह शब्द आत्म-सम्मान की एक पूर्ण चेतना लिये है एक सामूहिक घोषणा कि जब अन्याय असहनीय हो उठे, तब शोषित लोग अपने हिस्से का न्याय रचते हैं। यह चेतना निवासभूमि की सामूहिक संरचना से उपजती है जंगल-ज़मीन सिर्फ़ साधन नहीं, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक पहचान का विस्तार हैं। इसलिए जब सामुदायिक वन-अधिकार छीने गए, तो वह हमले को निजी से बढ़कर सांस्थानिक मानते हुए आवाज़ बनी। हूल दिवस इस सांस्कृतिक-राजनैतिक जुड़ाव का जीवंत स्मारक है, जो आदिवासी दर्शन सिर दर सार, सरना धरती ओर को आज के संवैधानिक विमर्श में बाँधता है। आज, ठीक 170 वर्ष बाद, 21वीं सदी का भारत वैश्विक बाजार, डिजिटल अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा गलियारों के नाम पर नयी-नयी परियोजनाएँ रच रहा है। परंतु जिन ज़िलों में हूल की गूँज उठी थी। साहिबगंज, दुमका, पाकुड़, गोड्डा, जामताड़ा उन्हीं भू-खंडों पर कोलियरियाँ, स्टोन-क्रशर या पावर-प्लांट खड़े हैं। राज्य सरकारें रोजगार और राजस्व का तर्क देती हैं, किंतु जिनकी ज़मीन गई, उनके लिए पुनर्वासन-पैकेज अक्सर नगण्य या अधूरा रह जाता है। आंकड़े बताते हैं कि संथाल परगना में पिछले दस सालों में वनभूमि अन्य प्रयोजन में रूपांतरित करने के 2800 से अधिक प्रस्ताव केंद्र के पास गये, जिनमें करीब 69 हज़ार हेक्टेयर भूमि चिह्नित है। इस बदलाव से प्रभावित परिवारों की संख्या एक लाख पार कर चुकी है, पर अधिकार पट्टा या समुचित मुआवज़ा पाने वाले सिर्फ़ 20 प्रतिशत हैं। ऐसे में हूल दिवस का स्वर अचानक वर्तमान में दख़ल देता है क्या यह विस्थापन उसी दमन-चक्र का आधुनिक संस्करण नहीं, जिसने 1855 में जीवन-मृत्यु का संग्राम खड़ा किया? वन अधिकार अधिनियम 2006 और पेसा 1996 ने ग्रामसभाओं को निर्णायक भूमि-स्वीकृति का अधिकार दिया, पर बहुत-सी जगह इन्हें कार्यान्वित करने की प्रक्रिया या तो धीमी है या कथित विकास की आपाधापी में दरकिनार होती रहती है। राज्य के सरकारी अभिलेखों में ग्रामसभा की स्वीकृति कभी-कभी प्राप्त दिखायी जाती है, किंतु ज़मीन पर समुदायों को भनक तक नहीं होती। यह उस इन्फॉर्म्ड कंसेंट की अवमानना है, जिसकी नींव पर लोकतांत्रिक विकास का तर्क खड़ा होना चाहिए। राजनीतिक स्तर पर भी हूल एक जीवित प्रश्न है। झारखंड की राजनीतिक दलों द्वारा हर वर्ष सिदो-कान्हू की जयंतियाँ मनाना, जुलूस निकालना, और सरकारी अवकाश घोषित करना सराहनीय प्रतीकात्मकता है। परंतु यदि इन्हीं क्षेत्रों में आदिवासी विकास योजनाएँ सबसे पिछड़े स्तर पर हैं, तो यह पूछना लाज़िमी है क्या आदिवासी अस्मिता केवल उत्सवों की वस्तु बनकर रह जायेगी? क्या सिदो-कान्हू को याद करना महज़ शहीदों की मालाओं तक सीमित रहेगा, या उनकी क्रांति की आत्मा हमारे नीति-निर्माण में भी बोलेगी? यहाँ पत्रकारिता, शिक्षा और साहित्य की बड़ी जिम्मेदारी है। राष्ट्रीय इतिहास-लेखन में 1857 का विद्रोह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहलाता है, पर 1855 की प्रतिरोध कथा अक्सर कुछ वाक्यों में समेट दी जाती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति समावेशी इतिहास की बात करती है अतः पाठ्यपुस्तकों में हूल, कोल विद्रोह, भील आंदोलन, तेभागा जैसी आदिवासी-किसानी लड़ाइयों का सम्यक् विवरण अपरिहार्य है। इससे विद्यार्थियों को समझ आयेगा कि स्वाधीनता संग्राम कोई एकरेखीय कथा नहीं, बल्कि बहुवचन में गूँजती विविध आवाज़ों का महासंगीत है। हूल दिवस पर केंद्र और राज्य सरकारें स्मारक-समारोह, सांस्कृतिक उत्सव और पुरस्कार वितरण करती हैं। प्रधानमंत्री द्वारा प्रतिवर्ष सिदो-कान्हू, चाँद-भैरव, फूलो-झानो को नमन किया जाता है। परंतु क्या सिर्फ़ नमन पर्याप्त है? ज़मीनी राहत शिक्षा की बेहतर पहुँच, मातृ-भाषा में स्कूल, आदिवासी युवाओं के लिए तकनीकी कॉलेज, पारंपरिक उद्यमों को बाज़ार, और स्वास्थ्य सेवाओं में जनजातीय-विशेष अनुसंधान इनसे ही स्रोत तरंग बनेगा। हूल हमें एक और रंग दिखाता है सामूहिकता की शक्ति। विद्रोह में गौला (ग्वाला), लोहार, पिछड़े किसान भी कंधे से कंधा मिलाकर लड़े, स्त्रियाँ सिर पर बिगुल और बाँस के भालों के साथ अगली कतार में थीं। फूलो-झानो ने शहीद होकर साबित किया कि प्रतिरोध लैंगिक बँटवारे से परे है। इसी सामूहिकता को आज जलवायु-विमर्श में मूर्त करना ज़रूरी है। जलवायु परिवर्तन के दौर में आदिवासी ज्ञान। जैसे जोहार खेती, मिश्रित बागान, बीज संरक्षण सतत विकास का मॉडल दे सकता है। जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर 'नेट-ज़ीरो' की बात होती है, तब आदिवासी समुदायों द्वारा संरक्षित साल-महुआ के वन कार्बन-सिंक साबित हो रहे हैं, पर विस्थापन उन्हें संरक्षक से विस्थापित बना देता है।समकालीन न्यायपालिका भी इस ऐतिहासिक विरासत से सीख सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने FRA (वन अधिकार अधिनियम) मामलों में बार-बार कहा है कि ग्रामसभा की सहमति के बिना भूमि अधिग्रहण असंवैधानिक है। परंतु निचली सतह पर विभिन्न कारणों से निर्णय उलझाते हैं कभी काग़ज़ी दस्तावेज़ों की कमी, तो कभी राजस्व-अधिकारी की रिपोर्ट अधूरी। यदि अदालतें यह मानने लगें कि आदिवासी परंपरागत अधिकार प्रेसक्रिप्टिव टाइटल हैं, जो आधुनिक दस्तावेज़ी प्रमाण से ऊपर हैं, तो न्याय दिलाना सुलभ होगा। 1855 में सिदो-कान्हू ने क़ाग़ज़ी दस्तावेज़ नहीं, लोकमान्यता को आधार बनाया था, आज संविधान उस लोकमान्यता का संरक्षक हो सकता है। हूल दिवस के संदेश की वैश्विक प्रासंगिकता भी कम नहीं। लैटिन-अमेरिका से अफ्रीका तक, स्वदेशी समुदाय जल-जंगल-ज़मीन के रक्षाधिकार के लिए उठ खड़े हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र स्वदेशी अधिकार घोषणा-2007 में मानता है कि पारंपरिक भू-संसाधनों पर स्वदेशी स्वामित्व अनिवार्य मानवाधिकार है। भारत यदि विश्व-गुरु पद का दावा करता है, तो उसे हूल जैसे आंदोलनों की ऐतिहासिक स्मृति को वैश्विक मानवाधिकार पाठ्य-प्रणाली में शामिल कर लोकतांत्रिक मॉडल पेश करना चाहिए। जहाँ विकास, स्वायत्तता और सांस्कृतिक विविधता का त्रिवेणी-संगम हो। इस संपादकीय का अंतिम पड़ाव वह प्रश्न है, जो हर वर्ष 30 जून को लाल मिट्टी के घाटों से उठता है क्या आदिवासी समाज आज स्वयं को उसी हाशिये पर पा रहा है, जहाँ 1855 में था? आंशिक रूप से नहीं, शिक्षा, प्रतिनिधित्व और संवैधानिक आरक्षण ने नई राह खोली है। झारखंड के विश्वविद्यालयों में संथाली विभाग, लोक साहित्य शोध पीठ, और जनजातीय मंत्रालय की छात्रवृत्तियाँ दूर तक उजाला फैलाती हैं। पर विस्थापन, मानव-विकास सूचकांक में पिछड़ापन, स्वास्थ्य-सुविधाओं की कमी और जल-संकट जैसे मुद्दे 'नयी लड़ाई' का स्वरूप ले चुके हैं। यह समकालीन हूल है जहाँ बम-बारूद नहीं, नीति-संवाद और संवैधानिक हथियार हमारी ढाल-तलवार होने चाहिए। जब भोगनाडीह में सूरज ढलता है, तो शहीद स्तंभ की परछाई साल-वन पर लंबी खिंचती है। उस छाया में एक सवाल गूंजता है क्या हमारी विकास गाथा उन परछाइयों को मिटा रही है, या उन्हें गाढ़ा कर रही है? हूल दिवस हमें हर साल याद दिलाता है कि लोकतंत्र का असली अर्थ केवल मतपत्र नहीं, अपितु इतिहास, संस्कृति और न्याय के तंतुओं को साथ पिरोना है। यदि भारत को सच-मुच विकसित राष्ट्र बनना है, तो उसे सिदो-कान्हू की हुंकार में छुपे समता-सूत्र को आधुनिक विकास-योजना के प्रस्तावना-पृष्ठ पर उकेरना होगा। इसलिए 30 जून केवल स्मरण-दिवस नहीं, बल्कि संकल्प-दिवस है एक सामूहिक वादा कि हम वन, नदी, भाषा, गीत और मन को बचायेंगे, हम विकास का चक्र घुमाएँगे, पर वह चक्र जब भी आदिवासी धरती को छुएगा, न्याय और सहभागिता की माटी से चिकना होगा। तभी हूल की आग धधकती नहीं, दीपशिखा बनकर लोकतंत्र को रोशन करेगी । और भारतीय गणराज्य यह कह सकेगा कि उसने अपने सबसे पुराने प्रहरी, अपने वनवासियों के सपनों को न सिर्फ़ सुना, बल्कि संविधान की स्याही से लिख भी दिया।

हंसराज चौरसिया

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254, E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

खेत में जुताई के दौरान गिरी बिजली करंट लगने से किसान झुलसा, जिला अस्पताल में भर्ती

सीतापुर जनपद सीतापुर के खैराबाद ब्लॉक के दतेली गांव में रविवार को एक किसान बिजली की लाइन गिरने से झुलस गया जयपाल (42) अपने खेत में ट्रैक्टर से जुताई कर रहे थे इस दौरान खेत के ऊपर से गुजर रही 11 हजार वोल्ट की विद्युत लाइन का तार टूटकर नीचे गिर गया तार टूटने की तेज आवाज के साथ ही वह सीधे खेत में गिरा तार जयपाल के पैरों में लिपट गया करंट लगने से वह जमीन पर गिर पड़े उनके दोनों पैरों में चोटें आई और शरीर का निचला हिस्सा झुलस गया। ग्रामीणों की मदद से जयपाल को सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया परिजन उन्हें पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खैराबाद ले गए वहां से प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें सीतापुर जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया वर्तमान में उनका जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है। ग्रामीणों ने बिजली विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाया है उनका कहना है कि खेतों के ऊपर से गुजर रही हाई वोल्टेज लाइनें पुरानी और खराब हालत में हैं इनकी समय पर मरम्मत नहीं की जाती ग्रामीणों ने प्रशासन से पीड़ित किसान को आर्थिक मदद और बिजली विभाग के कर्मियों पर कार्रवाई की मांग की है!!

पेट्रोल पम्पों के मानचित्र के नाम पर उत्पीड़न को लेकर मुख्यमंत्री से मिल कर बताया दर्द

लखनऊ। पेट्रोल पंप मालिको का एलडीए द्वारा किये जा रहे उत्पीड़न व सहकारिता की समस्याओं को लेकर कोआपरेटिव चेयरमैन वीरेंद्र पताप सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि समस्याओं का निराकरण शीघ्र ही किया जायेगा। कोऑपरेटिव चेयरमैन व पैट्रोल पम्प असोसिएशन के अध्यक्ष वीरेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि विगत कुछ वर्षो से लखनऊ विकास प्राधिकरण द्वारा वर्षो से सेवारत पेट्रोल पम्पो का एवं उनके स्वामियों का उत्पीड़न, नक्शा पास न होने की बात कहकर किया जा रहा है तथा पैट्रोल पम्पो को सील किया जा रहा है, जोकि न्याय संगत नहीं है। जबकि कि प्रदेश में किसी भी पेट्रोल पम्प को आरम्भ करने से पूर्व विभिन्न सरकारी विभागों से अनापत्ति प्राप्त कर उन्हे अन्ततः सम्बन्धित जिले के जिलाधिकारी के द्वारा जारी किये गये अनापत्ति के पश्चात् ही सम्बन्धित तेल कम्पनियां द्वारा पेट्रोल, डीजल एवं सी0एन0जी0 की बिक्री प्रारम्भ करने की अनुमति दी जाती है।लखनऊ में कई पेट्रोल पम्पों को प्राधिकारण ने नक्शे के नाम पर सील कर रक्खा है, जिससे उत्पीड़ित पेट्रोल पम्प मालिक व्यथित है और उनका रोजगार बन्द पड़ा है। मुख्यमंत्री से मांग की है कि प्राधिकरण को निर्देशित करें कि जो पेट्रोल पम्प पिछले कई वर्षो से संचालित है उन्हे छोड़कर नये लगने वाले पेट्रोल पम्प नक्शे को पास कराकर ही आरम्भ किये जाये। साथ ही जिला सहकारी बैंक के अंतर्गत बहुउद्देशीय बी पैक्स समितियों में सचिव भर्ती में गठित समिति में सभापति जिला सहकारी बैंक को समिति का चेयरमैन नामित करने हेतु अनुरोध भी किया है। मुख्यमंत्री ने शीघ्र ही समस्याओं के निराकरण हेतु आस्वस्त किया है।

आगामी त्यौहार मोहर्रम के दृष्टिगत व पुलिस अधीक्षक अमेठी द्वारा कस्बा जगदीशपुर का किया गया भ्रमण

जगदीशपुर अमेठी। आगामी त्यौहार मोहर्रम के दृष्टिगत शांति, सुरक्षा व कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु जनपद भ्रमण के दौरान पुलिस अधीक्षक अमेठी अपर्णा रजत कौशिक द्वारा कस्बा जगदीशपुर का भ्रमण कर मोहर्रम के जुलूस मार्ग व कर्बला स्थल का निरीक्षण कर संबंधित को आवश्यक आदेश/निर्देश दिये गये तथा उपस्थित लोगों से शांति एवं सौहार्दपूर्वक त्यौहार मनाने व अफवाहों को फैलने से रोकने व अफवाहों पर ध्यान न देने की अपील की गयी। इस दौरान क्षेत्राधिकारी मुसाफिरखाना अतुल कुमार सिंह व अन्य अधिकारी/कर्मचारी गण मौजूद रहे।

पति ने की दूसरी शादी, तब देवर ने भाभी से किया दुराचार

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर- जिले की शहर कोतवाली में एक महिला ने देवर पर दुष्कर्म का आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की है। महिला का कहना है कि आरोपित ने मौका पाते हुए उससे घिनौनी हरकत की। विरोध करने पर आरोपित ने उसकी पिटाई भी कर दी। हालांकि, तहरीर के आधार पर पुलिस ने महिला पति समेत आठ परिवारिक सदस्यों के खिलाफ सुसंगत धाराओं में एफआईआर दर्ज की है। एसएचओ सदर बाजार के मुताबिक, क्षेत्र की रहने वाली महिला ने पति सरताज अहमद, ससुर अहमद खां, सास अकीला, देवर आफाक अहमद उर्फ सोनू, इमरान अहमद, ननद रीना, रेहाना और सोनम के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। लिखित शिकायत में महिला ने बताया कि वर्ष 2022 में उनका निकाह सरताज अहमद से हुआ था। उसके निकाह में पिता ने 35 लाख रुपये खर्च कर काफी दहेज दिया था। आरोप है कि ससुराल पहुंचने पर पति कम दहेज मिलने का ताना देकर उसे प्रताड़ित करता था। वह अपने परिवारिक सदस्यों के संग मिलकर मायके से रुपये मांगकर लाने का दबाव बनाने लगा, इन्कार करने पर पति शारीरिक और मानसिक रूप से उसे परेशान करने लगा। महिला का आरोप है कि इस बीच पति सरताज ने एक सादे पेपर में उसके हस्ताक्षर लेते हुए एक फर्जी तलाकनामा तैयार कर लिया। जिसके बाद पति ने दूसरी महिला से भी निकाह कर लिया। जानकारी होने पर महिला ने विरोध किया तब उसे घर से निकाल दिया गया। महिला का कहना है कि मायके वालों के हस्ताक्षेप से पति ने उससे समझौता कर लिया। जिसके बाद वह ससुराल में रहने लगी। महिला का आरोप है कि मई 2025 में वह घर पर अकेली थी कि तभी देवर आफाक अहमद उर्फ सोनू ने उससे दुष्कर्म किया। विरोध करने पर देवर ने उसकी पिटाई कर दी। जिसके बाद महिला ने ससुराल वालों को देवर की करतूत बताई तब वह मुंह बंद रखने की बात कहकर धमकाने लगे। जिसके बाद पीड़िता ने शहर कोतवाली में तहरीर देते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई। एसएचओ का कहना है कि फिलहाल, तहरीर के आधार पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज की है। हालांकि, मामले की जांच कर पुलिस विधिक कार्रवाई करेगी।

निगोहां के रत्नापुर में प्रधान की दबंगई उजागर सरकारी पेड़ों की अवैध कटान

● ......प्रशासनिक हस्तक्षेप की मांग।

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज, लखनऊ। राजधानी लखनऊ के विकासखंड मोहनलालगंज के रत्नापुर गाँव में सरकारी जमीन पर लगे लाखों कीमती पेड़ों की अवैध कटान का मामला सामने आया है, जिसमें ग्राम प्रधान और उनके परिजनों की संलिप्तता बताई जा रही है। बताया जा रहा है कि ग्राम प्रधान के भाइयों ने सरकारी भूमि पर लगे महुआ, सिरसा और चिलबिल के पेड़ों को ठेकेदार के हाथ बेचकर कटवा दिया, जिनकी अनुमानित कीमत सवा लाख रुपये से अधिक आंकी गई है।प्राप्त जानकारी के अनुसार, रत्नापुर के गाटा संख्या 294, जिसकी रकबा लगभग डेढ़ बीघा है, पर वर्षों पुराने सरकारी पेड़ लगे हुए थे। बीते समाधान दिवस में जब इस भूमि पर पेड़ों की अवैध कटान की सूचना लेखपाल अशोक वर्मा को मिली तो उन्होंने पुलिस में इसकी शिकायत की। इस शिकायत के बाद मामला धीरे-धीरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गया।जानकारी के मुताबिक, पेड़ कटवाने का काम ग्राम प्रधान के परिजनों द्वारा ठेकेदार से मिलकर किया गया। कटे हुए दो पेड़ों की कीमत लगभग 60 हजार रुपये आंकी गई, जिसे ग्राम प्रधान के भतीजों ने आपस में बांट भी लिया है। हालांकि अभी तक पेड़ मौके पर ही कटे हुए पड़े हैं और उठवाए नहीं गए हैं।स्थानीय सूत्रों की मानें तो इस अवैध कटान में ग्राम प्रधान के पूरे परिवार की सक्रिय भूमिका रही है। वहीं इस मामले में दबंगई के चलते क्षेत्रीय राजस्व निरीक्षक हरेंद्र सिंह और लेखपाल अशोक वर्मा खुद को असहाय और बेबस महसूस कर रहे हैं। प्रशासनिक दबाव या राजनीतिक हस्तक्षेप के चलते अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है। वहीं ग्रामीणों ने मांग की है कि उप जिलाधिकारी मोहनलालगंज अंकित शुक्ला से इस मामले को गंभीरता से संज्ञान में लें और कटे पड़े पेड़ों को तत्काल कब्जे में लेकर सरकारी क्षति से बचाया जाए। साथ ही दोषियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में कोई भी व्यक्ति सरकारी संपत्ति को निजी स्वार्थ में नुकसान न पहुंचा सके।यह मामला न सिर्फ सरकारी संपत्ति की क्षति का है, बल्कि शासन-प्रशासन की निष्क्रियता और स्थानीय दबंगई के गठजोड़ को भी उजागर करता है। अब देखना यह होगा कि प्रशासन इस पूरे प्रकरण में कितनी तत्परता से कार्रवाई करता है।

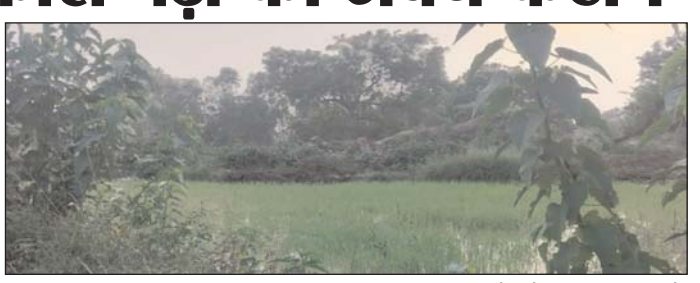

भूमि विवाद को लेकर दो पक्षों में खूनी संघर्ष, दोनों पक्षों की तहरीर पर दर्ज हुआ क्रॉस मुकदमा

स्वतंत्र प्रभात

नगराम। लखनऊ, राजधानी लखनऊ के नगराम थाना क्षेत्र के ममईमऊ गांव में रविवार सुबह एक जमीन के पुराने विवाद को लेकर दो पक्षों में खूनी संघर्ष हो गया। दोनों ओर से दर्जनों लोग घायल हुए हैं और एक-दूसरे पर मारपीट, गाली-गलौज और जानलेवा हमले का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी गई है। मामले में पुलिस ने दोनों पक्षों की तहरीर पर क्रॉस एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, राम मिलन पुत्र भवानी दीन निवासी ममई मऊ ने थाना प्रभारी को दी तहरीर में बताया कि रविवार की सुबह विपक्षी मेवालाल पुत्र दुलारे अपने पुत्रों नरेन्द्र, अजीत, बेला प्रताप और बहुओं के साथ उसके दरवाजे पर आ धमके और गंदी-गंदी गालियां देने लगे। विरोध करने पर विपक्षियों ने लाठी-डंडों से हमला कर दिया। बचाव में आई उसकी पत्नी मिठन्ना, बहन रानी, भाभी उर्मिला, शन्नो, सुनीता आदि को भी बेरहमी से पीटा गया। राम मिलन का आरोप है कि विपक्षियों ने फावड़ा व डंडों से हमला कर उन्हें गंभीर चोटें पहुंचाई।

वहीं दूसरी ओर, बेला प्रसाद पुत्र मेवालाल निवासी ममई मऊ ने भी थाना नगराम में तहरीर देते हुए आरोप लगाया कि राम मिलन पुत्र भवानी, फूलचंद्र, राजकुमार, शशि, रामविलास, रामदयाल, भानू आदि लोग उसकी जमीन के पास आकर गाली-गलौज करने लगे और फिर हमला कर दिया। बेला प्रसाद ने आरोप लगाया कि उन्हें और अन्य परिजनों को लाठी-डंडों से बुरी तरह मारा-पीटा गया। बचाव में आई उनकी पत्नी रोशनी को भी नहीं बख्शा गया और हमलावरों ने उसे भी लाठी-डंडों से पीटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया।नगराम थाना प्रभारी विवेक चौधरी ने बताया कि दोनों पक्षों की ओर से मारपीट की तहरीर प्राप्त हुई है। मामले में क्रॉस एफआईआर दर्ज कर ली गई है और चिकित्सकीय परीक्षण कराया जा रहा है। जांच के आधार पर आवश्यक विधिक कार्रवाई की जाएगी।घटना के बाद गांव में तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है। पुलिस ने क्षेत्र में गश्त बढ़ा दी है और शांति बनाए रखने की अपील की है। दोनों पक्षों के बीच पहले भी कई बार जमीन को लेकर विवाद हो चुका है।

झमाझम बारिश से किसानों को राहत, भारी बारिश से तहसील व थाना परिसर जलमग्न

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज, लखनऊ। राजधानी लखनऊ के मोहनलालगंज क्षेत्र में हुई मूसलाधार बारिश ने जहां भीषण गर्मी और उमस से राहत दी, वहीं खेतों को संजीवनी मिल जाने से किसानों के चेहरों पर भी रौनक लौट आई है। हालांकि, बारिश के बाद सरकारी व्यवस्थाओं की पोल भी खुल गई, जब तहसील और थाना परिसर पानी-पानी हो गए।रविवार की दोपहर बाद शुरू हुई जोरदार बारिश ने पूरे कस्बे और आसपास के गांवों को भिगो दिया। लंबे समय से बारिश की बाट जोह रहे किसान अब खेतों की ओर लौटने लगे हैं।जहां एक ओर मौसम खुशनुमा हो गया, वहीं दूसरी ओर तहसील और थाना परिसर में जलभराव के चलते आम लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। दफ्तरों में पानी घुस जाने के कारण सरकारी कामकाज प्रभावित हुआ और फरियादियों को परेशानियों से दो-चार होना पड़ा।कस्बे के प्रसिद्ध कालेवीर बाबा मंदिर में भी पानी भर जाने से श्रद्धालुओं को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। मंदिर का आंगन पूरी तरह से जलमग्न हो गया जिससे पूजा-पाठ का कार्य भी बाधित हो गया।

ग्रामीण अंचलों में दिखी खुशी की लहर........

वहीं बारिश का सबसे सकारात्मक असर ग्रामीण अंचलों में देखने को मिला। कनकहा, जबरौली, गौतमखेड़ा, भीलमपुर, धनवारा और भसड़ा जैसे गांवों में किसानों के चेहरों पर मुस्कान लौट आई। खेतों को नमी मिल जाने से अब किसान धान की रोपाई और अन्य खरीफ फसलों की तैयारी में लग गए हैं।गौतमखेड़ा निवासी किसान रामलाल निषाद ने बताया, बारिश से हमारी उम्मीदें फिर से जिंदा हो गई हैं। अगर कुछ दिन और ऐसा ही मौसम बना रहा, तो अच्छी पैदावार की पूरी संभावना है।

मौसम विभाग की चेतावनी व आश्वासन.......

मौसम विभाग ने अगले दो-तीन दिनों तक रुक-रुक कर बारिश होने की संभावना जताई है। इस बारिश को खरीफ सीजन की अच्छी शुरुआत माना जा रहा है। यह बारिश मोहनलालगंज क्षेत्र के लिए दोहरी तस्वीर लेकर आई है, एक तरफ जहां किसानों को फसलों के लिए राहत मिली, वहीं दूसरी तरफ नगर व सरकारी परिसरों में जलनिकासी की बदहाल व्यवस्था उजागर हो गई। जनता उम्मीद कर रही है कि जिम्मेदार अधिकारी अब इस ओर भी ध्यान देंगे, ताकि बारिश राहत के साथ-साथ अव्यवस्था का कारण न बने।

सीतापुर शहर कांग्रेस कमेटी घोषित 7 उपाध्यक्ष, 1 कोषाध्यक्ष, 9 महासचिव, 17 सचिव, एवं 1 प्रवक्ता

● संगठन ही कांग्रेस की शक्ति है- शिशिर

सीतापुर। शहर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों की सूची आज कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष श्री अजय राय जी ने स्वीकृत कर जारी की श्री राय ने सीतापुर शहर के सभी पदाधिकारी को संगठनात्मक कार्यो में पार्टी को सहयोग देने की अपील की शहर अध्यक्ष शिशिर बाजपेई ने बताया की उक्त कमेटी में उपाध्यक्ष पद पर रिजवान खान, रामचंद्र भार्गव, उपदेश गुप्ता, शावेज मुख्तार, मीना मिश्रा, प्रेमलता शुक्ला, डॉ0 रिचा मिश्रा को एवं कोषाध्यक्ष पद पर पवन कुमार शुक्ला को तथा महासचिव के पद पर डॉ0नीता श्रीवास्तव, मशरूर अहमद खान, अहमद अंसारी, मथुरा प्रसाद यादव, रविकांत, धर्मेश दीक्षित, आनंद नारायण, सर्वेश प्रताप सिंह, विपुल भार्गव, तथा सचिव के पद पर राकेश कुमार पाल, नोमान अंसारी, इमरान अली, श्यामू पांडे, पंकज कुमार अग्रवाल, अभय कुमार, फरीद मोहसिन, नयन मिश्रा, विनोद कनौजिया, राहुल पाल, मेराजुल उर्फ शाहनवाज, श्रीमती शिव प्यारी, रविंद्र राठौर, संजय सिंह, आरिफ खान, शाकिब अंसारी, श्रीमती जन्नतुल निशा, एवं प्रवक्ता के पद पर आशीष पांडे को मनोनीत किया गया है सभी पदाधिकारी को बधाई देने वालों में प्रमुख रूप से सांसद राकेश राठौर पूर्व विधायक रामगोपाल मिश्र पूर्व विधायक हरीश बाजपेई जिला अध्यक्ष डा0ममता पूर्व जिला अध्यक्ष रमेश निषाद विनीत दीक्षित उत्कर्ष अवस्थी कयूम अंसारी शमीना शफीक धीरेश कश्यप दीपा वैश्य आमोद मिश्र विजयनाथ अवस्थी चोक्ष विभु तारिक फारुकी श्रेष्ठ तिवारी प्रदीप सिंह चौहान कमल रावत संजय सनी हसीना खातून शोभित स्वास्थ्य अमरकांत राहुल रस्तोगी संजय दीक्षित इकबाल अंसारी सुधीर कुमार पांडे संजीत गुप्ता अनुपम राठौर नरेश गौड़ सभी खान हरीश वर्मा आदि ने बधाई दी।

इंदिरा नहर पर बच्चे जान जोखिम में डालकर कर रहे स्टंट

● ......सुबह 6 बजे से ही हो रही अवैध बिक्री, पुलिस संरक्षण का चौकाने वाला दावा।

स्वतंत्र प्रभात

नगराम, लखनऊ। नगराम थाना क्षेत्र से निकली इंदिरा नहर का बैराज इन दिनों बच्चों के लिए स्टंट स्पॉट बनता जा रहा है। हर रोज़ दर्जनों की संख्या में नन्हे बच्चे इस बैराज पर जानलेवा करतब करते देखे जा सकते हैं। कभी पानी में छलांग लगाकर, तो कभी ऊंची रेलिंग पर चढ़कर संतुलन बनाते हुए ये बच्चे न केवल अपनी जान खतरे में डाल रहे हैं, बल्कि भविष्य में किसी बड़ी दुर्घटना को भी न्योता दे रहे हैं।स्थानीय लोगों का कहना है कि यह सिलसिला कई दिनों से लगातार चल रहा है, लेकिन इसके बावजूद पुलिस व प्रशासन आंख मूंदे बैठा है। न तो कोई चेतावनी बोर्ड लगाए गए हैं, न ही किसी प्रकार की निगरानी व्यवस्था की गई है। नहर के आसपास कोई सुरक्षाकर्मी तैनात नहीं हैं, जिससे बच्चों के साथ किसी भी हादसे की स्थिति में तत्काल मदद भी संभव नहीं हो पाती।

ग्रामीणों ने आशंका जताई है कि यदि समय रहते प्रशासन ने सख्ती नहीं दिखाई, तो यह लापरवाही किसी मासूम की जान ले सकती है। खासकर गर्मी के मौसम में बच्चे नहर में नहाने और मौज-मस्ती के लिए आते हैं, लेकिन उनकी यह मस्ती कब मातम में बदल जाए, कोई नहीं जानता। स्थानीय निवासी शिवकुमार वर्मा ने बताया, ÷हमने कई बार बच्चों को टोकने की कोशिश की, लेकिन पुलिस की अनुपस्थिति और प्रशासन की उदासीनता की वजह से बच्चे भी बेखौफ हो चुके हैं।ग्रामीणों और समाजसेवियों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि नहर बैराज क्षेत्र में निगरानी बढ़ाई जाए, चेतावनी बोर्ड लगाए जाएं और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर पुलिस गश्त की जाए।अब देखना यह होगा कि क्या प्रशासन जागता है या फिर किसी अनहोनी का इंतजार करता है।

हजरत इमाम हुसैन और शहीदे करबला की याद में एक शाम का किया गया आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

बिसवां, सीतापुर साहित्यिक संस्था दबिस्ताने अदब बिसवां के द्वारा मदरसा बेबीज़ स्टडी सेंटर में हजरत इमाम हुसैन और शहीद ए कर्बला की याद में एक शाम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता सलीम कुरैशी ने की और निजामत अनवर बिसवानी ने की। मास्टर आरिफ अंसारी ने शायरों और अतिथियों का स्वागत किया। महफिल की शुरुआत कुरान पाक की तिलावत से किया गया। उसके बाद डॉक्टर शकील सागर ने नाते पाक के शेर पेश किये इस मौके पर एक दर्जन शायरों ने अपनी कविता के माध्यम से हजरत इमाम हुसैन को याद करते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया। शायरों द्वारा पढ़े गए चुनिंदा कलाम पाठकों के लिए प्रस्तुत है।

हाफिज अफाक ने पढ़ा, किस्मत संवर जाएगी अल्लाह की कसम।

मिल जाए बदनसीब को सदका हुसैन का।।

डाक्टर अफजल लहरपुरी ने कहा।

यजीदी फौज मेरे भी खिलाफ उतरेगी

बुलंद कर दिया मैंने हुसैन का परचम।

डॉ शकील सागर ने पढ़ा,

अता कर मुझको खुदाया तू हुसैनी हौसला।

मैं पियूं जामे शहादत यह मेरा अरमान है।।

अनवर बिसवानी ने अपना कलाम पेश करते हुए कहा,

मकतल में जा रहा है हथेली पे सर लिए।

अल्लाह बस तू ही है निगहबां हुसैन का।।

अध्यक्षता कर रहे शायर सलीम कुरैशी ने अपना कलाम पेश करते हुए कहा,

मासूम पर है तीर सितम किस से क्या कहूं।

अब इससे इंतिहा सितम और होगा क्या।

जुबैर बिस्वानी ने पढ़ा सलाम उसपर कि जो है अहमदे मुखतार का प्यारा।

सलाम उसपर कि जो है फातमा के आंख का तारा।।

देर रात तक चली इस महफिल में शमीम नातिक, नय्यर सकेब, जुबेर वारिस, रसूल धर्मपुरी, डाक्टर अजहर खराबादी और जुरात आजमी आदि ने भी अपने कलाम पेश करके कर्बला के शहीदों को अकीकत के फूल पेश किये। महफिल में बड़ी तादाद में श्रोता मौजूदथे ।रविश अनवर ने शायरों का शुक्रिया अदा किया।

मानसून की पहली बारिश से राहत तापमान में गिरावट, किसानों को खरीफ फसल का फ़ायदा

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर जनपद सीतापुर में भीषण गर्मी और उमस से जूझ रहे जिलेवासियों के लिए रविवार की दोपहर राहत लेकर आई मानसून की पहली झमाझम बारिश ने तापमान में गिरावट दर्ज कराई और लोगों को गर्मी से बड़ी निजात दी सुबह से ही मौसम में बदलाव के संकेत मिल रहे थे दोपहर तक घने बादलों ने आसमान को ढक लिया और उसके बाद झमाझम बरसात शुरू हो गई। बारिश का दौर शहर से लेकर ग्रामीण इलाकों तक जारी रहा पिछले एक सप्ताह से उमस और चिलचिलाती धूप ने आम जनजीवन को बेहाल कर रखा था दिन में गर्म हवाओं और रात में उमस भरी गर्मी ने लोगों को परेशान किया रविवार को अचानक मौसम बदलने और पानी गिरने से लोगों ने राहत की सांस ली बारिश से जहां सड़कों पर लोग भीगते हुए नजर आए तो वहीं बच्चों ने घरों के बाहर पानी में खेलकर मौसम का आनंद लिया। जगह-जगह नालियों से पानी बहकर सड़कों पर फैल गया लेकिन इससे किसी को खास दिक्कत नहीं हुई क्योंकि लोगों की खुशी चेहरे पर साफ झलक रही थी किसानों के लिए यह बरसात वरदान साबित हुई मौसम विभाग के अनुसार मानसून की यह पहली सक्रिय बारिश खरीफ की फसलों के लिए बेहद फायदेमंद रहेगी खेतों में नमी बढ़ने से धान की रोपाई और अन्य फसलों की बुआई में तेजी आएगी। बारिश के बाद खेतों की तरफ नजर दौड़ाई गई तो किसानों के चेहरे पर संतोष और उम्मीद की झलक दिखी मौसम विभाग ने आने वाले कुछ दिनों तक रुक-रुक कर हल्की बारिश की संभावना जताई है इस बीच, नगर पालिका ने जलभराव वाले इलाकों में पानी निकासी के निर्देश जारी किए हैं मानसून की इस पहली बारिश ने गर्मी से बेहाल लोगों को बड़ी राहत दी है!!

दो कारों की टक्कर के बाद लगी आग एयरबैग खुलने से बची यात्रियों की जान तीन लोग घायल

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर जनपद सीतापुर के पिसावा थाना इलाके में रविवार दोपहर को जल्लापुर चौराहे पर दो कारों की आमने-सामने जबरदस्त टक्कर हो गई हादसे के बाद एक कार में आग लग गई, जिससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई दोनों कारों में सवार तीन लोग घायल हो गए प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार एक कार नेरी की तरफ से पिसावां की ओर जा रही थी, जबकि दूसरी बरगवां की तरफ से महोली की ओर आ रही थी चौराहे पर दोनों गाड़ियों की इतनी जोरदार भिड़ंत हुई कि एक कार से धुआं निकलने लगा जैसे ही उसमें सवार लोग बाहर निकले कुछ ही क्षणों में कार में आग लग गई। हादसे की आवाज सुनकर आसपास के लोग मदद के लिए दौड़े मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने सभी घायलों को बाहर निकाला और तुरंत एम्बुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र महोली भेजा प्राथमिक उपचार के बाद घायलों को जिला अस्पताल सीतापुर रेफर किया गया। हादसे में पहली कार में सवार प्रफुल्ल बाजपेयी, शिल्पी बाजपेयी, पल्लवी मिश्रा, पर्व मिश्रा और महेंद्र मिश्रा शामिल थे दूसरी कार में शाहजहांपुर निवासी नीतू अग्रवाल, कुमारी अनन्या, योगेश चंद्र अग्रवाल, आलोक अग्रवाल और रुचि अग्रवाल सवार थे टक्कर की वजह से एक कार का एयरबैग खुल गया जिससे उसमें सवार लोगों की जान बची थाना प्रभारी ने बताया कि सभी घायलों की हालत फिलहाल स्थिर है और किसी को गंभीर चोट नहीं आई है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जलती कार में आग बुझाने की कोशिश की और यातायात सामान्य कराया थाना प्रभारी ने बताया कि हादसे में तीन लोगों को चोटें आई हैं फिलहाल किसी पक्ष की ओर से तहरीर नहीं दी गई है तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी!!

जिलाधिकारी ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अहिरौली का किया निरीक्षण

सिद्धार्थनगर। जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, अहिरौली, विकास खण्ड बढ़नी का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के भवन को देखा गया। भवन की स्थिति खराब थी। डाक्टर मौके पर उपस्थित थे। जिलाधिकारी को उपस्थित लोगों द्वारा अवगत कराया गया कि डाक्टर रहते है लेकिन सुविधा नही है। 6-7 गांव की आबादी को इस स्वास्थ्य केन्द्र से लाभ मिलेगा। लगभग 08 वर्ष पूर्व बना है। जिलाधिकारी द्वारा प्रभारी चिकित्सा अधिकारी बढ़नी से फोन से बात कर निर्देशित किया गया।

संक्षिप्त खबरें

कलेक्टर डॉ. केदार सिंह द्वारा शहडोल जिले में अमानक खाद, बीज बेचने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही के निर्देश

शहडोल पंचायत बुढार के ग्राम कोलमीछोट में कृषि विभाग के मैदानी अमले द्वारा किराना व्यवसाय श्री तीरथ प्रसाद शुक्ला के दुकान एवं गोदाम में बिना लाइसेंस के अवैध बीज भंडारण पाए जाने पर जब्त एवं सुपुर्द की कार्यवाही बीज अधिनियम के तहत की गई। उक्त कार्यवाही में सहायक संचालक कृषि रमेन्द्र कुमार सिंह , कृषि विकास अधिकारी रेखा अहिरवार,शिशुपाल सिंह राजपूत, नायब तहसीलदार शिवकुमार सिंह उप निरीक्षक श्री मृगेंद्र सिंह मरावी शामिल थे।

250 ग्राम गांजा के साथ पकडा

मथुरा। थाना फरह पुलिस ने 250 ग्राम गांजे के साथ 58 वर्षीय विष्णु पुत्र स्व. बाबूलाल निवासी कीठम थाना अछनेरा आगरा को गिरफ्तार किया है। इसके विष्णु मोटरसाइकिल से जा रहा था और उसके पास अपना एक मोबाइल भी थी। पुलिस के मुताबिक मोबाइल और मोटरसाइकिल चोरी के नहीं हैं। पुलिस ने मोबाइल और मोटरसाइकिल को भी कब्जे में ले लिया है। प्रभारी निरीक्षक थाना फरह त्रिलोकी सिंह के मुताबिक विष्णु को कल्पतरू की निष्प्रोज्य बिल्डिंग के पीछे कच्चे रास्ते पर गिरफ्तार किया गया है। एनडीपीएस एक्ट के तहत अभियोग पंजीकृत किया गया है।

दिल्ली सुराई बुलट के साथ राया पुलिस ने पकडा युवक

मथुरा। थाना राया पुलिस ने एक अभियुक्त को चोरी की मोटरसाइकिल, एक तमंचा कारतूस के साथ बरामद किया है। वाहन चैकिंग के दौरान अभियुक्त कान्हा पुत्र भूपेन्द्र निवासी नीमगांव थाना राया को चोरी की एक मोटरसाईकिल बुलट, एक तमंचा व दो जिन्दा कारतूस के साथ नए मथुरा बरेली हाईवे की सर्विस रोड पर सादाबाद रोड फ्लाईओवर अंडरपास से महावन की तरफ करीब 200 मीटर की दूरी से गिरफ्तार किया गया। बुलट मोटर साइकिल चोरी के सम्बन्ध में थाना कालकाजी (दिल्ली) पर मुकदमा पंजीकृत है। प्रभारी निरीक्षक थाना राया अजय कौशल ने बताया कि अभियुक्त से हुई बरामदगी के सम्बन्ध में थाना राया अभियोग पंजीकृत कर अभियुक्त के विरुद्ध विधिक कार्यवाही की गयी है।

चोरी के आठ फोन के साथ चार गिरफ्तार

मथुरा। थाना वृन्दावन पुलिस ने चार अभियुक्तों को चोरी के आठ मोवाइल फोन सहित गिरफ्तार किया है। सूरज पुत्र स्व. हिटलेश मोगा आश्रम रोड मोहल्ला खेडा थाना उत्तर जिला फिरोजाबाद, मनोज पुत्र हरि सिंह निवासी मोहल्ला कबीर नगर खेडा थाना उत्तर जिला फिरोजाबाद, आश मोहम्मद उर्फ आशू पुत्र अलीम निवासी बरी का नगला 60 फुटा रोड थाना रामगढ जिला फिरोजाबाद, एक अभियुक्ता भी इनमें शामिल है। चौकी श्री बिहारी जी थाना वृन्दावन मथुरा से सभी को गिरफ्तार किया गया।

छाता में हुई बारिश से तहसील में हुआ जलभराव

छाता तहसील में भरा बरसात का पानी।

मथुरा। छाता में रविवार को हुई भारी बारिश से हर जगह जलभराव हो गया। तहसील में बने हुए कई सरकारी कार्यालय तक पानी पहुंच गया। सड़क रास्ते पानी से जलमग्न हो गए। जिससे सभी को परेशानी का सामना करना पड़ा। अधिकारियों के कार्यालय व तहसील परिसर में जल भराव हो गया। कर्मचारी पानी में होकर निकलने को मजबूर हुए। दोपहर करीब दो बजे के लगभग मूसलाधार बारिश होने के कारण छाता में जगह, जगह भारी जलभराव हो गया और यह बारिश लगातार एक घंटे से अधिक समय तक पड़ती रही। ओल्ड जीटी रोड सब्जी मंडी नई तहसील पुलिस क्षेत्राधिकार आवास एवं कार्यालय एसडीएम आवास एवं कार्यालय के आसपास जलभराव हो गया। जिससे तहसील के लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। तहसील में जल भराव की यह काफी पुरानी समस्या है लेकिन अभी इस समस्या का समाधान नहीं हो सका है।

फर्जी बिलों लगाकर माला माल हो रहे सचिव, सहायक सचिव पंचायत

● उप यंत्री और जनपद में बैठे अधिकारियों की मिली भगत से ठेकेदार करा रहे गुणवत्ता विहीन स्टाफ डैम का निर्माण कार्य

स्वतंत्र प्रभात

शहडोल प्रदेश सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में निर्माण कार्य के लिए लाखों रुपए मुहैया करा रही है। जिससे ग्रामीण स्तर पर उपयोगी व सभी कार्य गुडवत्ता पूर्व हो सके। जिसमें ग्रामीणों को सुविधा मुहैया और जरूरते पूरी की जा सकें। जिसके तहत पंचायत स्तर पर शासन द्वारा चलाए गए कई योजनाएं जो ग्रामीण हित के लिए कराई जाती है, पर इस कालाबाजारी के दौर पर और मिलावट खोरी के इस दौर में हर कोई सिर्फ अपने कमिशन से मतलब रखता है। उसे निर्माण कार्य से कोई भी मतलब नहीं रहता। फिर चाहे वह किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य क्यों ना हो, कारण यह भी हैं कि अधिकारी जमीनी स्तर पर मौका मुआयना करने नहीं जाते। जिससे कि निर्माण एजेंसी और अधिकारियों की साठ-गाठ से निर्माण धीन पुलिया य स्टाप डैम ढहने की कागार पर आ जाते है।

15 लाख रुपये की लागत से हो रहे निर्माण कार्य मे मिट्टी युक्त रेत से बन रहा डैम

जनपद पंचायत बुढार के ग्राम पंचायत अतरिया में चल रहे स्टाफ डैम निर्माण कार्य में ठेकेदार के द्वारा जमकर घोटाले बाजी की जा रही है, आपको बता दें कि करीब 15 लाख रुपए की लागत से स्टाफ डैम का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। जहां यह स्टाफ डैम में जमकर भ्रष्टाचार की होली खेली जा रही, कारण यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्र वासियों को इन निर्माण कार्यों के बारे में जानकारी न होने के कारण मनमौजी तौर पर अपने मन से कोई भी घटिया मटेरियल जैसे सुमेंट रेत गिट्टी सरिया लोकल सामग्री का उपयोग करके इसका ढांचा खड़ा कर दिया जाता है । जो दिखने में तो स्टाफ डैम की तरह ही रहेगा पर अंदर से कितना मजबूत हो सकता है यह तो जांच के बाद ही पता चल पाएगा। जबकि गुणवत्ता से महज यह स्टाफ डैम निर्माण कार्य जो कराया जा रहा है ज्यादा से ज्यादा साल से 2 साल के अंदर ही पूरी तरह से जर्जर हो जाएगा। क्योंकि जहाँ सरिया और सृमेंट कि कमी हो वहाँ स्ट्रेक्चर कैसे बच सकता

हैं।

फर्जी बिलों का जमगढ़ पंचायत अतरिया

इस ग्राम पंचायत में चाहे सी सी सड़क निर्माण कार्य हो या बब्बू के खेत के पास बन रहा पुलिया हो इस पर आज तक न ही सूचना बोर्ड लगा और न ही गुडवत्ता हीन कार्य हुआ। ग्रामीणों के काफी विरोध के बाद भी इस का निर्माण कार्य जारी रहा। और इतना ही नहीं इस ग्राम पंचायत में फर्जी बिल लगा कर सरकार को लाखों- करोड़ों रुपए का चूना लगाया जाता हैं। ग्राम पंचायत के पोर्टल में हमेशा बिलों को ब्लर करके ही अपलोड किया जाता। जिसके की ग्रामीणों को किसी भी वस्तु या निर्माण कार्यों के लगे फर्जी बिल को छुपाया जा सकें।

मथुरा में झमाझम बारिश से सुहाना हुआ मौसम

सड़कों पर भरा गंदा पानी, यात्री रहे परेशान

मथुरा। अषाढ मास का आखिरी सप्ताह है। इसके बाद सावन लग जाएगा। अभी मथुरा में जोरदार बरसात का इंतजार है। जन्माष्टमी के बाद बरसात बूढी होन लगती है यह ब्रज में कहावत है। रविवार को बादल घुमडे और बसरे भी लोगों को भीषण गर्मी से राहत मिली। किसानों को भी खेती किसानी के लिए बरसात की सख्त जरूरत थी। किसान आसमान की ओर टकटकी लगए हुए है। धान की रोपाई से लेकर बाजरा की बुआई तक सब बरसात पर निर्भर है। भीषण गर्मी और इतने तापमान में सिंचाई के तमाम वैकल्पिक संसाधन जवाब दे जाते हैं। हालांकि अभी भी किसानों के लगातार बरसात की आवश्यकता है। रविवार दोपहर 2 बजे अचानक झमाझम बारिश शुरू हो गई। बारिश से मौसम सुहाना हो गया और लोगों को पिछले एक हफ्ते से चल रही गर्मी से राहत मिली। हालांकि, बारिश ने शहर की व्यवस्था की पोल खोल दी। मथुरा के प्रमुख मार्गों पर जलभराव की स्थिति बन गई।

हाईवे पर बाइक सवार दंपति की हादसे में मौत

● किशनपुर से पत्नी को दवा दिलाने ले जा रहे थे हरिश्चन्द्र

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। दिल्ली आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर मथुरा में पुराने एआरटीओ कार्यालय के पास रविवार की सुबह करी दस बजे हुए सडक हादसे में बाइक सवार दंपति की मौत हो गई। बाइक सवार दंपति को टक्कर मार कर वाहन भाग निकला। पुलिस ने दोनों के शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिये। दोनों शवों की पहचान कर ली गई है। मृतक महावन थाना क्षेत्र के गांव किशनपुर निवासी हरिश्चंद्र (52) अपनी पत्नी ममता (50) हैं। हादसे के बाद हाईवे पर भीड़ एकत्रित हो गई और दोनों ओर जाम लग गया। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेने के बाद जाम खुलवाया और यातायात को सुचारू किया। मृतक दंपति के परिजनों को भी घटना की सूचना पुलिस ने दी थी। कुछ ही देर में गांव के लोग पोस्टमार्टम हाउस पर पहुंच गये। दपंति की मौत की सूचना से गांव में मातम पसर गया है। हरश्चिद्र बेहद ही मिलनसार व्यक्ति थे।

पुलिस ने सीसीटीवी कैमारे खंगाल रही है जिससे हादसा करने वाले वाहन का पता लगाया जा सके। मृतक हरिश्चंद्र अपने पीछे दो बेटा एक बेटी छोड़ गए हैं। हरश्चिन्द्र अपनी पत्नी ममता को दवा दिलाने के लिए मोटरसाइकिल से हॉस्पीटल जा रहे थे इसी बीच हादसे में दोनों की मौत् हो गई। थाना प्रभारी निरीक्षक शैलेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि मृतक दंपति के शवों को पंचायत नाम भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। टक्कर मारने वाले अज्ञात वाहन की तलाश की जा रही है, हाईवे पर लगे सीसीटीवी कैमरे भी खंगाले जा रहे हैं जल्द ही वाहन की तलाश की जाएगी।

कॉरिडोर के विरोध में पर्यटन मंत्री से मिला धर्म रक्षा संघ का प्रतिनिधिमंडल

● काशी और अयोध्या के बाद मथुरा के विकास को लेकर गंभीर है राज्य सरकार

स्वतंत्र प्रभात

कॉरिडोर के विरोध में पर्यटन मंत्री से मिलते ब्रज के साधु संत।

मथुरा। धर्म रक्षा संघ के कार्यकारी अध्यक्ष एवं श्रीहरिदास पीठ चतुर्थ संप्रदाय विरक्त वैष्णव परिषद् के महंत मोहिनी बिहारी शरण महाराज के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्री माननीय जयवीर सिंह से एक प्रतिनिधिमंडल के साथ उनके सिरसागंज शिकोहाबाद स्थित निवास पर भेंट की गई। वार्ता के दौरान उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बांके बिहारी मंदिर का न्यास के माध्यम से सरकारीकरण एवं अधिग्रहण की योजना का विरोध करते हुए ब्रज की मूलभूत समस्याओं एवं पर्यटन विकास को लेकर चर्चा की गई और एक ज्ञापन सौंपा गया। महंत मोहिनी बिहारी शरण महाराज ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मथुरा वृन्दावन एवं संपूर्ण ब्रज क्षेत्र में जिस प्रकार की विकास गंगा बहाने का संकल्प लिया गया है वह एक स्वागत योग्य कदम है इसके लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और संपूर्ण सरकार बधाई के पात्र है, आने वाले समय में मथुरा वृन्दावन एवं बृज क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक नई पहचान स्थापित करेगा। धर्म रक्षा संघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आचार्य ज्ञानेश महाराज ने कहा कि बांके बिहारी मंदिर वृन्दावन का न्यास के माध्यम से सरकारीकरण या अधिग्रहण नहीं होना चाहिए मंदिर की मर्यादा परंपरा एवं संस्कृति की रक्षा करना सरकार का दायित्व है। माननीय पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि अयोध्या और काशी के बाद माननीय मुख्यमंत्री जी का ध्यान अब मथुरा वृन्दावन एवं बृज क्षेत्र के विकास पर केन्द्रित है, उन्होंने आश्वासन दिया कि बांके बिहारी मंदिर के विषय में वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से वार्तालाप कर संत समाज एवं बृजवासियों की चिताओं से अवगत कराएगे प्रतिनिधिमंडल में योगी यूथ ब्रिगेड के प्रदेश अध्यक्ष कुंवर अजय तोमर, प्रदेश संयोजक विक्की धाकड़, महानगर अध्यक्ष जितेंद्र धाकड़, युवराज सिंह चौहान आदि मौजूद रहे।

भिखारी बनकर ट्रैफिक सिग्नल पर यात्रियों को लूटने वाले तीन शातिर गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। पुलिस हौज खास, दक्षिण जिला के कर्मचारियों ने सक्रिय चोरों के एक गिरोह को गिरफ्तार करके सराहनीय कार्य किया है जो भिखारी बनकर ट्रैफिक सिग्नल पर निर्दोष यात्रियों को निशाना बनाते थे। आरोपी अर्जुन नाथ, तूफान नाथ और चांद नाथ को ई-एफआईआर संख्या 80054446 दिनांक 05.06.2025, धारा 303(2) बीएनएस, थाना हौज खास के तहत गिरफ्तार किया गया है। जांच के दौरान, शिकायतकर्ता की एक चोरी हुई सोने की अंगूठी उसके कब्जे से बरामद की गई।मामले की गंभीरता को देखते हुए, एसीपी/हौज खास की समग्र देखरेख में एसएचओ/हौज खास के नेतृत्व में एसआई सलमान अहमद, एचसी कुलदीप, एचसी जसवंत सिंह, सीटी विशाल की एक टीम का गठन किया गया, ताकि तेजी से कार्रवाई की जा सके।जांच के दौरान, टीम ने तकनीकी स्रोतों के माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण और प्रमुख इनपुट एकत्र किए और प्रमुख इनपुट को शुद्ध किया और मैनुअल और तकनीकी निगरानी के माध्यम से कुछ और महत्वपूर्ण इनपुट निकाले। इलाके में लगे 60 से अधिक कैमरों की सीसीटीवी फुटेज और कथित व्यक्तियों के भागने के संभावित रास्ते को एकत्र किया गया और सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया गया।अपराधियों के बारे में कुछ सुराग पाने के लिए टीम के सदस्य इलाके में सतर्क रहे। तदनुसार,संदिग्धों की तस्वीरें तकनीकी उपकरणों के माध्यम से विकसित की गई और उनकी पहचान प्राप्त करने के लिए पुलिस नेटवर्क के माध्यम से प्रसारित की गई। जेल/जमानत से रिहा हुए अपराधियों की सूची और बी.सी., नवोदित अपराधियों के डोजियर का भी संदिग्ध के विवरण से मिलान किया गया। इसके अलावा, टीम ने अपने मैनुअल सूचना नेटवर्क को तैयार किया और तकनीकी निगरानी भी की। सीसीटीवी फुटेज के विश्लेषण से टीम ने टीएसआर में सवार तीन कथित व्यक्तियों का पता लगाने में कामयाबी हासिल की। टीएसआर को महरौली की ओर जाने वाले मार्ग पर ट्रैक किया गया और एक कैमरे में टीम द्वारा पंजीकरण संख्या पकड़ी गई। सुराग का अनुसरण करते हुए टीम ने दो ऑपरेटरों को ट्रैक किया जिनके माध्यम से टीएसआर को ट्रैक किया गया और उन्होंने 03 कथित व्यक्तियों को भाटी माइंस में छोड़ने की बात बताई। क्षेत्र के सीसीटीवी की स्कैनिंग से टीम चोरों का पता लगाने में सफल रही और लगभग एक पखवाड़े तक सटीक निगरानी के कारण एक कथित व्यक्ति की गिरफ्तारी हुई। बाद में,उसकी पहचान अर्जुन नाथ के रूप में हुई। उसने अपने साथियों के साथ उपरोक्त अपराध कबूल कर लिया। उसके कब्जे से 01 चोरी की सोने की अंगूठी बरामद की गई। पूछताछ के दौरान उसने खुलासा किया कि उसने अपने रिश्तेदारों के साथ मिलकर अपराध को अंजाम दिया है। उसकी निशानदेही पर तूफान नाथ और चांद नामक दो साथियों को भी गिरफ्तार किया गया। फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए आगे की जांच जारी है। गिरफ्तार किए गए।

बाइक के लिए रिश्तेदारी भूल गया युवक, मार दी गोली

स्वतंत्र प्रभात

अस्पताल में मौजूद घायल व्यक्ति के परिजन।

मथुरा। बाइक के पैसों के लिए युवक रिस्तेदारी भूल गया। फोन कर सुबह चार बजे ही घर बुला लिया और घर पहुंचते ही गोली मार दी। रविवार की सुबह गांव सलेमपुर में एक युवक ने अपने रिश्तेदार को गोली मार दी। गोली लगने से मौके रही गिर पडा। पुलिस को किने ने घटना की सूचना दी। पुलिस ने घायल को मथुरा न्यूरो अस्पताल में भर्ती कराया।

इसके बात आरोपी की तलाश शुरू की। एसपी सिटी ने बताया कि दोनों युवक आपस में रिश्तेदार है। बाइक को लेकर दोनों में कोई विवाद चल रहा है। बाइक के पैसों के लेनदेन को लेकर गांव सलेमपुर में रविवार सुबह चार बजे एक युवक को घर से बुला कर गोली मार दी गई। गोली लगने से वह गंभीर घायल हो गया। पुलिस ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया है।

पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। महोली के रहने वाले रवि ने रविवार सुबह चार बजे गांव सलेमपुर निवासी रामकुमार को वॉट्सऐप काल करके जरूरी काम बताया और मिलने के लिए बुला लिया। रामकुमार के आते ही उसने तमंचा निकल कर गोली मार दी। इससे वह घायल होकर जमीन पर गिर पड़े। आरोपित मौके से फरार हो गया। घायल को देख लोगों ने पुलिस को सूचना दी। एसपी सिटी राजीव कुमार सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे।

भामाशाह जयंती पर 51 लोगों ने किया रक्तदान

● यह सराहनीय कार्य दूसरे संगठनों के लिए भी प्रेरणा बनेगा: रविकांत

स्वतंत्र प्रभात

नगर उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल द्वारा भामाशाह जयंती पर्व पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, शिविर में 32 क्षेत्रीय इकाइयों से 51 लोगों ने रक्तदान किया।

मथुरा। नगर उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल द्वारा भामाशाह जयंती पर्व पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 32 क्षेत्रीय इकाइयों से 51 लोगों ने रक्तदान किया। शिविर का उद्घाटन करते भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मंत्री रविकांत गर्ग ने किया। उन्होंने कहा कि दानवीर कर्ण के बाद सबसे बड़े दानवीर भामाशाह की जयंती पर संपूर्ण भारत वर्ष में व्यापारियों द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं। इस श्रृंखला में उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल द्वारा रक्तदान सराहनीय व अन्य संगठनों के लिए भी प्रेरणादायक है। उपस्थित महर्षि दयानंद चिकित्सालय के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ संजीव अग्रवाल ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में रक्तदान कर व्यापारियों ने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियां का निर्वहन किया है। इस रक्त से बहुत बड़ी संख्या में जरूरतमंद लोगों को रक्त की आपूर्ति की जा सकेगी। इसके लिए नगर उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल बधाई का पात्र है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महानगर अध्यक्ष सुनील अग्रवाल ने कहा कि व्यापारिक समस्याओं की पूर्ति के साथ साथ सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति भी व्यापार मंडल का लक्ष्य है। समाज की हर वर्ग व तबके के लिए कार्य करना हमारी प्राथमिकता है आज नगर की विभिन्न व्यावसायिक समितियां से 51 यूनिट रक्तदान का लक्ष्य प्राप्त कर हमने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का पालन किया है। इस अवसर पर नगर पदाधिकारी द्वारा जिला अस्पताल से रक्तदान के लिए आई लगभग 10 लोगों की टीम को स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया व कार्यक्रम के विशिष्ट सहयोगी विजय सलेक्शन गारमेंट का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन महानगर महामंत्री शशिभानु गर्ग द्वारा व धन्यवाद महामंत्री सुनील साहनी द्वारा व्यक्त किया गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से रामचंद्र खत्री, शशि भानु गर्ग, सुनील साहनी, मीणा लाल अग्रवाल, श्रीभगवान चतुर्वेदी, विकास जिंदल, दिलीप कुमार पांडे, बालकृष्ण चतुर्वेदी, शरद चतुर्वेदी, मुकेश अग्रवाल, गुरमुख दास, राज नारायण, राकेश प्रेस, नागेंद्र वर्मा, प्रेम शंकर अग्रवाल, रामनरेश अग्रवाल, अश्वनी गर्ग, नवीन अग्रवाल, कपिल अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, दिनेश बिजली, प्रदीप पोशाक, नितिन अग्रवाल, ऋषि अग्रवाल, बसंत खंडेलवाल, अनूप अग्रवाल, धर्मवीर अग्रवाल, प्रभात गुप्ता, दीपक खंडेलवाल, प्रदीप यादव, निखिल अग्रवाल शुभम ठाकुर धर्मेंद्र चौहान, योगेश अग्रवाल, राजेंद्र अग्रवाल, गौरव ठाकुर, गोला जैन, सुमित जोशी, मुनेंद्र ठाकुर, विनोद दिवाकर, राधा रमन देवनाथ, बृजेश शर्मा, संतोष वर्मा, धीरज दादा, अनुष्का अग्रवाल, दुर्गेश, हरीश गोला, आदि उपस्थित रहे।

ब्रिटिश काल में बनी बर्डपुर कोठी को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए प्रशासन ने नगर पंचायत कपिलवस्तु को सौंपा

● बर्डपुर कोठी पर्यटन स्थल के रूप में विकसित से क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियां बढ़ेगी, जिससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर मिलेगे

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। जिले की प्राचीन विरासत में शामिल रहे अंग्रेजों की आलीशान बर्डपुर कोठी को नई भव्यता प्रदान कर पर्यटकीय रूप में विकसित करने के लिए जिला प्रशासन ने नगर पंचायत कपिलवस्तु की देखरेख में नियम और शर्तों के अनुसार अंग्रेजों की बर्डपुर कोठी को 30 वर्ष के लिए लीज पर दे दिया है।शर्तों के अनुसार लीजधारक को बर्डपुर कोठी के मूल स्वरूप से बिना छेड़छाड़ किए लगभग तीन करोड़ रुपये से मरम्मत और रंगाई पुताई कराना होगा। बर्डपुर कोठी के संचालन से यहां देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों को सुविधा मिलेगी।

जिला प्रशासन की तरफ से जिले में स्थित प्राचीन भवनों का जीर्णोद्धार कर जिले में पर्यटकीय सुविधाओं को विकसित किया जा रहा है। इसी के तहत डीएम डॉ. राजागणपति आर को तहसीलदार नौगढ़ की तरफ से भेजे गए रिपोर्ट में बताया गया कि बर्डपुर में स्थित बर्डपुर कोठी के भूमि विवरण एवं मालिकाना हक के संबंध में अवगत कराया गया कि बर्ड साहब की कोठी विलियम टेस्को के नाम पर दर्ज है।

कुल चार गाटों में लगभग दो हेक्टेयर (15 बीघा) भूमि में स्थित बर्डपुर कोठी रख-रखाव के अभाव जर्जर व क्षतिग्रस्त हो चुकी है। डीएम के आदेशानुसार उक्त भूमि को राज्य सरकार की भूमि घोषित की गई है। साथ ही इसके रख-रखाव एवं संचालन के लिए नगर पंचायत कपिलवस्तु को कार्ययोजना तैयार करने का निर्देश दिया। इसके तहत नगर पंचायत ने इसे मरम्मत कराने के साथ ही लीज पर देकर संचालित करने की कार्ययोजना तैयार की है। नगर पंचायत कपिलवस्तु की कार्ययोजना के अनुसार लीज धारक को बर्डपुर कोठी के मरम्मत की शर्तों के साथ पहले 20 वर्ष के लिए लीज पर दिया जाएगा। इसमें पहले पांच वर्ष तक लीज धारक को शुल्क नहीं देना होगा। इसके बाद प्रत्येक वर्ष एक लाख रुपये शुल्क देय होगा। जिलाधिकारी की संस्तुति के साथ 20 वर्ष के बाद 10 साल तक किराए में 15 प्रतिशत की वृद्धि के साथ दिया जाएगा। लीज धारक किसी दूसरे को इस कार्य के लिए हस्तांतरिक नहीं कर सकेगा। कोठी के मूल संरचना में कोई परिवर्तन, नव निर्माण नहीं किया जाएगा केवल मरम्मत की कार्यवाही की जाएगी। परिसर में स्थित पेड़ नहीं काटे जाएंगे। अंग्रेजी हुकूमत में बनी बर्डपुर कोठी रख-रखाव के अभाव में बदहाल हो चुकी है। वर्तमान में इसके परिसर में सड़क जर्जर है। भवन की दीवार का प्लास्टर, मार्बल, लाबी, छत का प्लास्टर उखड़ गया है। साथ ही भवन के दरवाजे खिड़कियां गायब हो चुकी हैं। नगर पंचायत की तरफ से यहां सड़क का निर्माण होगा, लेकिन मरम्मत कार्य लीज धारक कराएगा। इसके अलावा कोठी की चाहरदीवारी में लगे पेड़ के बीच उगी झाड़ियों की सफाई करके यहां फूल पत्ती लगाकर पार्क बनाया जा जाएगा। जिससे यहां आने वाले लोगों को स्वच्छ व सुंदर वातावरण मिल सकेगा। भारत सरकार के स्वदेश दर्शन योजना में बौद्ध थीम पार्क कपिलवस्तु के पर्यटन विकास के कार्य में सृजित परिसंपत्तियों के संचालन एवं रख-रखाव के संबंध में स्पोर्ट टूरिज्म से संबंधित जारी गाइड लाइन के अनुसार यहां कार्य होगा। नगर पंचायत कपिलवस्तु के ईओ नवीन कुमार सिंह का कहना है कि लीज धारक को ब्रिटिश काल में बने बर्डपुर कोठी के दो मंजिला आलीशान भवन का सुंदरीकरण करना होगा। इसे मैरिज हाल, बैंक्वेट हॉल के स्वरूप में विकसित करने के लिए जो इन्वेस्टर पैसा लगाएगा वही संचालन भी करेगा। इससे सरकारी राजस्व का लाभ व विदेशी पर्यटकों और स्थानीय लोगों को सुविधा होगी।

औरंगजेब लोहा लेने वाले वीर गोकुला पर हुआ ऐतिहासिक नाट्य मंचन

● मुंबई के नाट्य किरण मंच की मथुरा के किसान की वीरता की कहानी की भव्य मंचन

स्वतंत्र प्रभात

औरंगजेब से लोहा लेने वाले वीर गोकुला पर नाट्य मंचन करते कलाकार।

मथुरा। ब्रजधाम के वीर गोकुला की ऐतिहासिक गाथा पर आधारित नाट्य मंचन 'गोकुला' का भव्य आयोजन ब्रज कला केंद्र, मसानी के ऑडिटोरियम में हुआ। ये नाट्य मंचन नाट्यकिरण मंच, मुंबई द्वारा प्रस्तुत किया गया। मंचन का शुभारंभ सांसद चौधरी तेजवीर सिंह, उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद द्वारा संचालित गीता शोध संस्थान के कोआर्डिनेटर चंद्र प्रताप सिंह सिकरवार, अमरनाथ गर्ल्स कालेज के प्राचार्य अनिल वाजपेयी ने दीप प्रज्जवलन कर किया। गोकुला नामक पुस्तक का विमोचन भी सांसद व अन्य गणमान्य ने किया। इस नाटक ने दर्शकों को ब्रज की शौर्य परंपरा से जोड़ा और एक भावपूर्ण ऐतिहासिक अनुभव प्रदान किया। मुम्बई से आये कलाकारों ने मंचन किया कि औरंगजेब के शासन काल में हुए अत्याचारों का गोकुला व उसके साथी जाट किसानों ने न केवल मुकाबला किया बल्कि उसके सेनापति व सैनिकों को मार दिया था। बाद में सनातन धर्म की रक्षा के लिए आगरा में कोतवाली के सामने औरंगजेब ने गोकुला को तलवार से टुकड़े टुकड़े कर दिया था। वीर गोकुला सिनसिनी (भरतपुर) निवासी महाराजा सूरजमल के पूर्वज थे। वह मुगल शासक औरंगजेब के अत्याचारों के विरुद्ध डटकर खड़े हुए।

उन्होंने सनातन धर्म और ब्रज की अस्मिता की रक्षा हेतु आगरा फब्बारे पर अपने प्राणों की आहुति दी थी। इस नाटक का लेखन व निर्देशन देव फौजदार ने किया, जिनकी शोधपूर्ण दृष्टि और रचनात्मक कल्पना मंचन की आत्मा बनी रही। मंच पर ऐतिहासिक यथार्थता को जीवंत करने में जयंत देशमुख का योगदान रहा। तलवारबाज़ी और युद्ध दृश्यों का निर्देशन गुरु बिश्वजीत और फाइट मास्टर रूपेश चौहान ने किया, जबकि मोहन सागर द्वारा रचित संगीत ने भावनात्मक दृश्यों को ऊंचाई प्रदान की। मंचन में शैली बंसल शाह, दीपक, प्रमोद लवानिया और कृष्णरंगम थिएटर का विशेष योगदान रहा। मंचन में तेजस यादव ने वीर गोकुला की शानदार भूमिका निभाई। अन्य प्रमुख भूमिकाओं में जोगिंदर बोकेन, सत्यम दांगी, जिमी सलगोत्रा, अनिल कुमार, राकेश भदौरिया, बेला बारोट, महेश, पल्लवी, संजना, गौरव, आदित्य, अजय आदि का गजब का मंचन रहा। शाम सात बजे से शुरू हुए इस नाटक को भारी संख्या में दर्शकों ने देखा। पूरा ऑडिटोरियम खचाखच भरा रहा और हर दृश्य पर तालियों की गूंज यह सिद्ध करती रही कि दर्शक न केवल भावविभोर हुए, बल्कि उन्होंने गोकुला के बलिदान और स्वाभिमान की गाथा को आत्मसात किया। 'गोकुला' केवल एक नाटक नहीं, बल्कि ब्रज की बलिदानी परंपरा का जीवंत दस्तावेज बनकर सामने आया।